क्रियाकरहु भाष्यो श्रुतिशोधि ३४४ ॥ तब सुग्रीव सुआयसु लीन्ही। विधिवत क्रिया बन्धु की कीन्ही॥ जल अंजुलि दै सबन समेत। राम सखा गृह गये सचेत ३३५ ॥ क्रिया बिताइ राम पै गये। अनुजहि प्रभु पठवावत भये॥ सब समाज सह तब सुग्रीवहि। दियो राज अगुखित बल सीवहि॥ बानर तीरथ जल लै आये। पढ़हिं मंत्र द्विज परम सुहाये॥ करि अंगदहि लषण यु राज। आप गये जहँ रघुकुल राज ३४७ ॥

दो० तात सीय सुधि राखेहु करहु राज रस भोग।
इमि कहि ऋष्यमूक पर राम रहे गहि योग ३४८ ॥

सो० तारा उमा समेत कपि पति विहरत राजनिज।
गिरिपर रघुकुल केतु देखत बर बरसा समय ३४९॥

दो० इक पर बरसन घौन पुनि बरसन काल सुधन्य।
मनहुं दान दीवे भयो चिन्तामणि चैतन्य ३५० ॥

कवित्त ॥

बोलत पपीहा घने बोलत हिये को मोद राजहिं बला सतोगुण की मनोकतारु। बार बार करत विलासचारण छवि छवि भली परैं शिखर समूहनमें जलधारु॥ गिरिधर दास देखो पावस सरस ऋतु ब्राली अति अच्छी कहैं पच्छी बैठि डारुडारु। पौन पुरवाई तापतेजी दुरवाई छाये नभ धुरवाई नाचै बन मुरवाई चारु ३५१ ॥

सवैया ॥

घन घोखि बिराजति है न सुनौ यमदूतकी सैनहै रोस पगी। जल बूंदगिरै नहिं देववधू दृग आंसुकी धार महा उमगी॥ नहिं जीगर के गनये बनके तन तापितसों निकरै चिनगी। बिजुरी घनबीच जुरीनहिंहै यह प्यारी वियोग की आगिजगी ३५२ ॥

दो० इमि विलपति रघुनाथके वरषा गई बिहाय।
आई सुन्दर सरदऋतु निरमल नभ दरशाय ३५३ ॥

कवित्त ॥

शीतल सुगन्ध मन्द पवन अनन्द कन्द निरमल भयें अंग सुन्दर अंचलके । बोलत मधुर खग कुसुमित नग बैठि अति सुखदैया जेकोलैया बोल कलके ॥ गिरधरदास नदी भईहैं प्रमाण वारिबीती तरुणाई मनोइन्द्री जोर दलके । सूखिकै थलहि भये पंकजात थलके विभूषिकै जलहि भये पंकजात जलके ३५४ ॥

चरणा दोहा ॥

आई सरद सुकण्ठन आये कोपै लक्ष्मण बन्धु ।
चले लषण धनु धारि निरखि बोले करुणासिन्धु ४५ ॥

त्रिभङ्गी छन्द ॥

लावहु कपि कातै विक्रम बातै जाहु तुरंतै रोसतजौ । आशरसों हालो मारयौबाली सोइ बलशाली हाथ अजौ ॥ इमि तेहि समुझाई लावहु भाई सुनि फणिराई आसु चले । सीखवहि सुनिकै आवत गुणिकै कपि शिर धुनिकै रोयभले ३५६ ॥

दो० अंगद राजासों कह्यौ जा बलपायो राज ।
सो अब आवत कोपकरि भूलिगये हितकाज ३५७ ॥
तब डरसह सुग्रीव तिय पठई लक्ष्मण पास ।
कीश बुलाये पुञ्जमिके उरगलानि भ्रमत्रास ३५८ ॥

मत्तमातंग लीलाकर दंडक ॥

जाइ तारापरी पांयपैं ताछनै कोप त्याग्यो तियाजानिकै वीर सुग्रीवपैं जाय देख्यो तिया द्वन्द सैं । पूजिकै प्रार्थ कीजै क्षमा नाथ भूल्यो नहीं बात जो था बुलाये गये रोज एते प्रभू हूत्त आनंदमें ॥ लै हनूमन्त औ जामवंतादिको संग सौमित्रके मित्र श्री रामको रामपैं आइकै दंडसो भूपरो । सांतकै क्रोध लायो हिये कीश कों पास बैठे सबै खोज के हेतु वातैं करै सीय आवै अबै सोकरो ३५९ ॥

दो० इतनेहू में आये तहां यूथप कोटिन कोटि ।
को कवि ता वर्णन करै होतशेष मति छोटि ३६० ॥

छप्पय ॥

नर नरअस अवतार पनस केसरी दरीमुख । सतबलि दंभ सुखेन सुसुख दधि सुख समरोन्मुख ॥ मैंद दुबिद गजगवय गंध मादन गवाच्छ नल । जामवंत धूम्राछवेग दरशी समेत दल ॥ अति उत कटकटक लै नीलकटक पति बिकट भट । तहं आय पाय परि रामके खरो भसो कर कोरि भट ॥ ३६१ ॥

दो० सोय खोजि इक मास में फिरि आवहु बन चारि ।
नहिंआवैतेहिमारिहौं कहिपठएदिशि चारि ३६२॥

चौपाई ॥

हनुमत अंगद आदि बली गन । दिशि दच्छिण पठए सबगुणि मन ॥ दई मुद्रिका हरि हनुमानहिं । देखेउ तातसियामन प्राणहिं ३६३ ॥ सुनि सुकंठआयसु बलछाए । कोटिन कपि सब दिशन सिधाए ॥ उत्तर पूरब पश्चिम केरे । लहो नाहिं सुधिफिरे बड़ेरे ३६४ ॥

दो० हनुमदादि दिशि दच्छिण खोजत बिंध नगेश ।
मिल्योनिशाचर एकमग ताहिहन्योतेहिदेश ३६५॥

मोटक छन्द ॥

खोजैं बन कंदर बंदरसो । सीता दरशै यह नेहबसो ॥ देखी नहिं भूमि कुमारी जबै । बैठे कपि सोचि बिचार तबै ३६६ ॥ कैसे मिलि हैं प्रभु नारि दई । बीती सब औधि अबेर भई ॥ यों शोचत खोज करैंसगरे । देखा बिल एक तहां अगरे ३६७ ॥

सो० जामैं बिटप अनेक कांचन के फल फूल युत ।
लखी नारि तहंएक करति घोरतप तेजमय ३६८॥

बसुकला छन्द ॥

ता पास जाइ । कह कीशराइ ॥ तुम अहहु कौन । मोहिं कहहु तौन ३६९ ॥ सो कहति बैन । मय रचित ऐन ॥ यहअहै कोश । मोहि दियोईश ३७० ॥ मनुकी कुमारि । निवसौं बिचारि ॥ तुमफलहि खाउ । सुन्दरंसचाउ ३७१ ॥

रघुनाथ काज। सत होत आज॥ इमि कहि-प्रवीन। पङ्कु-नई कीन॥ ३७२॥
दो० तबै नैन मूंद्यो सबन आए बाहर कीग।
स्वयं प्रभा ह्वै कै बिदा गई जहां जगदीश ३७३॥
हरनी छंद॥
कढ़े बिलतें उर शोचमए। कपीश नदी पति तीरगए। निहारि अगाध अपार सबै। बिचार लगे करि बेगु तबै ३७४॥ मरे हम सब्बन काम भयो। इथा इकमास बिहाय गयो॥ कपीश हनैं अति रोस भए। गए दिनयोंहि निरास गए ३७५॥ रहो गिरि कंदर बीच परो। तहांहि जटायु को बंधुवरो॥ सुन्यो रव सो तहं सो निकरो। निहारत बानर इन्दहरो ३७६॥
दो० आसुसबन कहं खाय हौं बिधि मोहिं दियोअहार।
कहि अपक्ष पक्षी चलो यथा अपक्ष पहार ३७७॥
चौपाई॥
लखि कपि सबै डरे अति भारे। काहहिं कि यह नम आपु पधारे॥ काह युवराज जटायु समान। भाग्यवंत को और जहान ३७८॥ दसशिर के सिर भूमि गिराई। मरो सुगति रघुबर करपाई॥ बंधु नाम सुनिकै संपाती। बोलो सुनहु सबै अरिघाती ३७९॥ मैन तुमहिं मारहुंगो तात। कहहु बंधु मेरेको बात॥ सुनि सब कथा रिच्छपतिबरणी। तब खगकहत चरणधरिधरणी ३८०॥ अहन सुवन हम दोउ भाई। रविके तेजदया यह पाई॥ सुनि चंद्रमाकह्योइमिमोही। कपिनदेखि ह्वैहैपरतोही ३८१॥ मैं देखतसीता कहंतात। मिलिहै सुधि जोहिहित पछितात॥ ऐसेकहत कटे दोउ पच्छ। बोलो खग तब सुभट सपच्छ ३८२॥
दो० इह ह्यांहौं छत योर मैं नत दसमुख सुख तोरि।
आजुहि देतोमानकिहि रामहिं असमतिमोर ३८३॥
गाहा॥
अनुज शत्रु जो मारै मेरो हित सोइ स्वच्छ।

इमि कहिकै संपाती अंबर उड्यौ प्रतच्छ ३८४ ॥

चौपाई ॥

कपिन लख्यौ सागर अति घोर। परसत अंबर जासु हलोर ॥ बैठे इमि सब करत विचार। कैसे जैहैं याके पार ३८५ ॥ संशय सब विधि जानि अचैन। कहत भये अंगद यह बैन ॥ को सागरके जैहैपार।सोवरणाऊ सबबीर उदार ३८६ ॥ सुनि निज निज गति बरणहिं कीस। कोउ दस योजन कोऊ बीस ॥ कह युवराज सुभट सरदार। मोहिं न बार जात या पार ३८७ ॥ पै किमि फिरिहौं यह संदेह। सुनिकह रिच्छराज बुधिगेह ॥ तुमहिं उचित नहिं तहं को जान। हौ हम सबके ईश प्रधान ३८८ ॥ जौं हम होत तरुण बल धाम। गहि त्रिकूट लावत जहं राम ॥ अब इन सबको प्राण अधार। हनूमान हैं पवन कुमार ३८९ ॥

दो० किमि बिसरे बल आपनो बैठिरहे चुप मारि।

उठहु पुत्र कारज करहु रामध्यान उरधारि ३९० ॥

सो० रीछ राजकी बात सुनत बढ़े परमामये।

जिमि परबहिं नदतात तिमि ऊंचे नभलौंगये ३९१॥

बरवै ॥

करि उर रघुबर ध्यानहिं पवनकुमार। गरजि बचन बर बोले सुखद अपार ३९२ ॥

कवित्त ॥

कूटिकै त्रिकूटको बहावौं रतनाकर मैं सागर उलीचौं छणहीं मैं प्रणकरके। सेषको उखारौं फारौं पुहुमिपताल जाइ बांधौं यमराज मलौं कालकों पकरके ॥ गिरिधरदास कहौं रामकी शपथकरि होय जौ सहाय शेषफन फारौं धरके। तोरिकै पवारौं जैसे कंजन मतंग मत्त दश शिर रावणके पंच शिर हरके ३९३ ॥

दो० इमिकहि उर रघुबीर धरि कूदिगयो आकाश।

लखि स्वरूप सुरचकित चित भीगभये गतत्रास ३९४ ॥

छप्पय ॥

उड्यौ सपच्छ सुमेरु किधौं मनतें सतगुण निरखि सुर भये मुदितशिव। कहिसकतिन सो छवि भारती जो कपि के कूदतभई ॥ सुर सिद्ध यच्छ गन्धर्वमुनि जै जै करि दुंदुभि दई १९५ ॥ सिंधुकहे मैनाक निकरि भेंट्यौ कपिराजहि। ताहि बंदिकै चलो करन रघुबर के काजहि ॥ मधि में सुरसा आइ असनहित बदनबढ़ायो। बढ़िक्रमसों लघु होय होय मुख बाहर आयो ॥ पुनि चलत सिंहिका निशिचरी छायागहि खैंच्यो झटहि। तेहि मारि मूकसों सरितपति पारगयो मरकट झटहि १९६ ॥

सो० तहं ह्वै सिखर सवार लखि सागर सोचनलगे।
आइ सकैं वा पार अंगद नील दिनेश सुत १९७ ॥

चौपाई ॥

कपि पुनि पलटि निहारी लंका। जहं निवसत दशमुख गत शंका ॥ कहि न जाइ शोभा नगरी की। नीकी कनकमई सगरीकी १९८ ॥ करिबिचार धरिकै लघुरूप। निशि मुख पुर प्रबिश्यो कपि भूप ॥ तहं लंका उठि बोली ऐसे। तू शठ निदरि जात मोहि कैसे ॥ तब कपि मुष्टिहनी गत शंका। परि पुनि उठी लंकधरि लंका ॥ बोली बचनसुनहु हनुमान। सीता कहं खोजहु बुधिवान ४०० ॥ राम बिजय होइहि हम जान। अवशि जाहिंगे रावण प्राण ॥ इमिकहि लंकानारिसिधाई। लंकापुरप्रबिशे कपिराई ४०१

दो० अवलोकत नगरी रुचिर सगरी सुन्दर रूप।
बने धाम अभिराम बहु रतनन जडित अनूप ४०२ ॥

चामर छन्द ॥

धाम धाम मैं ललामबीर इन्द्रराजते। मल्ल तुल्ल बाजते किते प्रचण्ड गाजते ॥ नारि बैठि कै अटा अनेक भांतिसोहहीं। कन्त कण्ठ बाहुदै बिनोद चित्त मोहहीं ४०३ ॥ गावती कहूं सुरंग बाजनै बजावतीं। राच्छसी अनूप रूप देवता लजावतीं ॥ देव यच्छ नाग की कुमारि कालसैं

घनी। पानबारुणी किये प्रमत्त सोवनी बनी ४०४॥ राज पत्थमैं सुरत्य बाजि वीर घूमते। मत्तव्याल शैलसे खरेअनेक भूमते॥ नाचतीं अनेक बारनारि चारुता धरे। मारियां सुरङ्ग हारहीरकै गरेपरे ४०५॥ देखतो अशंकलंक नैरितेश की भली। केशरी कुमार कीश केशरी महाबली॥ और धामदेखिकै तुरन्तही गयोतहां। लंकनाथ सोवतो रह्यौ तियानलै जहां ४०६॥ नारिसुन्दरी अनेक बीचसेज पैंचनो। चन्चला समूहमैं महान मेघहैमनो॥ देखि रावणै विचार कीश चित्तमैंकरो। हैप्रतापवंतधीर शत्रुमोहरो ४०७। यों विचारिकै वहोंरिसीय खोजमैं चलो। देखतोभयो अशोक बाग जायकै भलो॥ शिंसुपा निहारि तातरे लखी विदेह जा। राक्षसी बनेश नारिवृन्द मैं यथा अजा ४०८॥

दे।० कृशतनमन रघुनाथमैं चषचरणनि कीओर।
लखि प्रणामकरि लुकिरहोपातन पवनकिशोर४०९॥

से।० ताही क्षण मतिमंद आयो नैऋत नाहतित।
संगलिए तियवृन्द सीताके पर बोधहित ४१०॥

तोमर छन्द॥

भजुमोहि राज कुमारि। गजको सिंगार विचारि॥ तजुतुच्छ रामहिं नारि। सुखदानि संपति धारि ४११॥ जगमैं जितेरस भोग। सुरनाथ शंकर योग॥ तोहिदेऊंगा सब तौन। हठत्यागिदै गुणभौन ४१२॥ तृण ओटकै सुकुमारि। भइबोलती निरधारि॥ तजि राम तोसन प्रीति। असको करै अनरीति ४१३॥

दे।० सिंहनारि बनसिंह तजि ग्रामसिंह ढिगजाय।
तज न सीताराम तजितोहि लखै सतभाय४१४॥

चौपाई॥

मारग चलो सुनत रिसिछायों। मंदोदरी बहुत समुझायो॥ तब इकमास प्रमाणहिं कियो। हुकुम राक्षसिन कों इमिदियो ४१५॥ तुम सब इहिशिक्षहु निरशंक। इमि कहिरावण प्रविशेउ लंक। ते तब सब आयसु अनुसार॥

तरजहिं सीताहिं बिबिधि प्रकार ४१६ ॥ तहंत्रिजटाइक निशिचरि रही। ताने सपन देखि इमिकही ॥ इमसपना देख्यो असआली। आए रामसेन सजिहाली ४१७ ॥

दो० जीतिलंक सीता लईदिय विभीषणहिं राज।
सो सब ह्वै है सांचही हेनिशिचरी समाज ४१८॥

सो० इमिसुनिकै ते सर्वउठि उठिकै निजगृहगई।
सियाविकल तेहिपर्व अतिविलाप करतीभई ॥

चौपाई ॥

हारघुनाथ दीन दुखहारी। हालक्ष्मण प्रभु मन सुख कारी॥ लघुअपराध इतो दुखदीनो। ऐसो नाथ निठुरपन कीनो ४२०॥ हे अशोक वनिका हरशोकहिं। सफलनाम निजकरु याशोकहिं॥ इहिबिधि कहत दुखी अतिजानी। राम राम बोलो कपि ज्ञानी ४२१॥ डारिदई मुद्रिका मनोहर। उठि सियलई ताहि ताहीपर ॥ लखि मुद्रिका शोच उरछायो। इहिको कौन भांतिले आयो ४२२॥ इमि शोचत देख्यो तरु ओट। बैठो रुचिर एक कपिछोट ॥ कहइ सीय जो इहिलै आयो। इतआवइ जिननाम सुनायो ४२३॥ तब हनुमान जाइ सिय पास। कियो प्रणामहिं सहित हुलास॥ सीता कहै कौन तुम भाई। तबबोलो कपिशीस नवाई ४२४॥ मैं रघुवीर दास हनुमान। आयो खोजन तुमहिं सुजान॥ दीन चीनहित इहिमहि चात। पूछोराम कुशल तुवमात ४२५॥ सीताकहै न निहचै होई। तुमकहं राममिलें कहं सोई॥ नरवानर मिलाप किमिभयो॥ कैसो वपु तिनको छबिमयो ४२६॥ तब हनुमान सुनाई कथा। भये मित्र वानरपति यथा। जननि राम घनश्याम शरीर। कंज विलोचन मोचन पीर ४२७॥

दो० जेगुणहैं रघुनाथ मैं तेनतिहूं पुरमाहिं।
हासीताहामैथिली इमिप्रतिज्ञा बिलखाहिं॥४२८॥

रोलाछन्द ॥

सुनत कपिके बचन सीता जल भरे दोउनैन। तातकिम

इत आय है सिय कहे ऐसे नैन॥ कहत पवन कुमार सो हैं सकल लायक मात। सुरसरिस बलवंत संग बनचरन सह कपितात ४२९॥ कहहु जनक कुमारि सब कपि अहैं तुम सम रूप। सुनत निज तन प्रगट कीन्हो शैलसम कपि भूप॥ अतिहि तेज निधान कंपितभूमि धारतपाय। पर्‌यो सीता चरण लखि अति रही आनंद छाय ४३०॥ दै अनेक असीस सीता कहति सुनु हनुमान। मास मधिजौं आय हैं तौ पाइहैं मम प्रान॥ कहेउ बायस एक मारी चोंच मेरे पाय। हस्योता अघ नैन ताको तीन लोक घुमाय ४३१॥ कौनहित प्रभुमोहि बिसारी हनत नहिं दसशीश। इतनहुं अपराध बांचत मोर पाय कपीश॥ कहत सुनि हनुमान जननी धरहु धीरज चित्त। आइ प्रभुनाथत खलहि सहधाम सुत दलबित्त ४३२॥ खबरि नहिंपाई अबै मोहिं देहु आयसु जाउं। भूख लागी कहहु तौ फल बाटिकाके खाउं॥ सुनत सीता कही सुतफल खाहु सोच बिहाइ। चलो मारुत पूत तब सिय चरणपर सिर नाइ॥ ४३३॥

दो० बिटप अनेक उखारिकै खाए फल कपि ईश॥
बन रक्षक रक्षणहने खबर सुनी दशशीश॥ ४३४॥

चौपाई॥

असी सहस बर बीर पठाये। ते सब कोपि कीश ढिग आये॥ तिनहिं क्षणकमहं मार्‌योकैसे। बज्रअज सुतन एक हरि जैसे ४३५॥ पुनि प्रहस्त सुत पठयो राजा। मंत्री पांच बली सह साजा॥ तिन कहं कीश निपात्यो कैसे। एक सत्य बहु पापहि जैसे ४३६॥ सोसुनि कोपि रक्षभरतार। पठयो रण हित अक्ष कुमार॥ करि प्रणाम सो लीने सैन। चल्यो समर हित बिक्रम ऐन ४३७॥ देख्यो कपिहि जाइसो कैसा। अति उतंग फाटक चढ़ि बैसा॥ करमैं परिघ लिये अति भारी। मारे जाते अमित सुरारी ४३८॥ कोपवंत मानहुं जमआप। तेजवंत जनुजम

को बाप॥ बुद्धिवंत मनु जमको दादा। लखि डर भई कुमारहि जादा॥ ४४९॥
दो० बरष्यो आयुधविविधि बिधि तेहिसहिकीशसमच्छ।
पटकि भूमिमहंबसनसमजमपुरपठयोअच्छ॥ ४४०॥
सो० सुनिनिशिचर शिरमौर परम कोपि दृगअरुणकरि।
निरखिइंद्रजितओरकहततातअब जाहुतुम ४४१॥
चौपाई॥
अति उपाधि कीन्ही बनचारी। तातें लावहु ताहि सुरारी॥ देखूं तौ वह बानर कैसो। जाने दुसहकर्म किये ऐसो ४४२॥ सो सुनि गरजि सहित अहलादू। सभाबीच बोलो घननादू॥ शंभुशपथकर कहौं पुकारी। आजु गहौं नरसह बनचारी ४४३॥
कवित्त॥
भागै जौं पताल औरआतल तलातल मैं अंबर लुकाय चलौ जाय नदी ईशकों। संगमें सहाय हेतलावै देव दल सब कपिन समेत कपिईश नराधीश कों॥ गिरिधर दास आवैं पच्छपै सपच्छ होय विंध्याचल मेरु सहा वेग धरेरी सकों। शतआवैं सूरज सहस आवैं शक्रलच्छ आवैं लच्छीश तऊ बांधिलाऊं कीशकों ४४४॥
सो० इमिकहि पितुपद बंदिसंगलिये कोटिन सुभट।
निशिचर चल्योअनंदि टंकारत धनुवज्रसम ४४५॥
छप्पय॥
चलत शक्रजित हलत परनि दलमलत धराधर। जल निधिजलउच्छलत छलत सुरहृदय सहित डर॥ दुरतनूरतें दूर लगदूर दूरकरि। हलचल सुरपुरहोत शिखर विखरत गिरिकेपरि॥ सहचासन आसन त्यागितिय भवन पाक शानलुक्यो। किहिओर जोरसों आजु यहलरनहेत रणभट झुक्यो ४४६॥
दो० जाइलख्यो हनुमान कों बैठोकाल समान।
करत भयो घननाद तब घनसम नादमहान ४४७॥

घरी द्वैकलरि इंद्रजित ब्रह्मफांस कइंडारि।
बांधिलियाहनुमानकहंकपि बंधिगयोविचारि४४८॥

गाहाछन्द ॥

तब अतिकरत कोलाहल भटनसहितघननाद।
रावण सन्मुख लाएउ कीशहिसह अहलाद४४९॥

कवित्त ॥

बरे बरे बीरबने घने करजोरे गिरिधर दास सोहैं मुख
मुखकी प्रभा जके। शारद बजावैं बीनगावैं गीत नारदादि
बेद पढ़ैं गुरु शुक्र सोंह भोंह कोतके॥ दूरपैं दिनेश आगि
लागिकै कपाट खरे बंदगी करत चन्द दृग द्युतितें ढके।
काल सबकाल घड़ियाल द्वारधरे खरे दशदिशि पाल दश
दिशि दशशीश के ४५०॥

दो० इमि प्रताप बलशत्रुको अभय गाथ्यो हनुमान।
कपिहिदेखि अतिगाजिकैबोलो निशिचरत्रान ४५१॥

चौपाई ॥

रेतूकौन कहांतेंआयो। केहिहित बीरवधेफलखायो॥
तब हनुमान कहा सुनु रावन। मोहि पठयो खर बालि
नसावन ४५२॥ जिनतुव ईश ईश धनुखंड्यो। जेहि अशक्त
तूलज्जित छंड्यो॥ जाकीनारि चोरि तू लायो। सो सिय
सहितचोरहमपायो ४५३॥ अबतें जियन चहत मतिमंदू।
सियदै प्रभुहि जाय पदबंदू॥ नातरु दिनदश में दशशीस।
तासिरकंदुक खेलिहैंकीश४५४॥ सुनिसकोपकह निशिचर
नाऊ। आसुहि सुभट याहि धरि खाऊ॥ सुनिकै उठे
बीरभरि रीसन। तबबोले करजोरि बिभीषन ४५५॥

दो० नृपहिदूतवध उचित नहिं दण्डकरहु गुनितुच्छ।
सुनि रावण अज्ञादई जारहु याकी पुच्छ ४५६॥
तब निशिचर सब लंकतें बसनतैलघृत लाय।
कपिकी पूंछिलपेटिकै दीनीआगि लगाय ४५७॥

मध्याछन्द ॥

लागी जबआगी। भारी अतिजागी॥त्यागी तबफांसी।

सोई बलरासी ४५८ ॥ धारे उरक्रोधा । कूदोकपि योधा ॥ धारो बलभारो । सारोपुर जारो ४५९ ॥

मायाछन्द ॥

हाथी औ घोड़े सबजारे जगमाहीं । दाराछो सूझै पुर औरो कछुनाहीं ॥ रोवैंहैं नारीनर हाहा यहबोलैं । भागे भैपागे अरलागे समडोलैं ४६० ॥

वासंती छन्द ॥

सीतास्वामी दास सकललङ्कायों जारी । कूद्योजाके सिंधु अमर्महिं नास्योसोझारी ॥ सीता सोहैं जाय चरणमें राख्यो माथा । मांगी अज्ञाकोश शिरहिं सोफेस्यो हाथा ४६१ ॥

विष्णुपद छन्द ॥

तियचूड़ामणि दिय चूड़ामणिलै तेहिकोश भलो । जय रघुवरसिय लषणओशपति इमिकहि आसुचलो ॥ चढ़ि चिकूटपैं कूदिमहाबल सागरपारगयो । गरजिजोर अंगद आदिक के उर अतिमोददयो ४६२ ॥ तवते उठिउठि हनू-मान सों मिलते भये भले । प्राण मिलै तिमि सबहि राम ढिग पूछत सुनत चले ॥ मगमधुबन बन बर पति उपवन तहं सबकोश भये । खाये फलहि रखवान मारे उर अति हर्षमये ४६३ ॥

चरणादोहा ॥

तेकपिपति सों जायपुकारे कपिन कियो जो हाल ॥
सुनिसुग्रीव सुध्योकारज गुणिमुदितभये तेहिकाल ॥
इतनेई महं अंगदादि सब आयेकोश सुजान ।
बंदिरास राजाको चरणनवरण्योसब आख्यान ४६४ ॥
उठि रघुवर हनुमंत उर लायोचूड़ामणिकरलीन ।
पुनिपुनिभेटतप्रियासरिसगुनिहग अरिकहतप्रवीन ॥
कहहुतातकिमि जनकसुतासों सुनि बोले हनुमान ।
लगतनअसनरहितइकबेनीजपतिआपुकोध्यान ४६५ ॥
दो० जननि दशा कहिंजातिनहिं अवधिरह्यो इकमास ।
समुझिअनंत कथाहि प्रभुचलियवेग तिनपास ४६६ ॥

लंकादही छणमें सकल भये अमित बलवान।
सहलसख्यामें रावणहिं मरि है प्रभुके बान ४६७ ॥

बरवा दोहा।

सुनि कपिपतिसों सम्मतकरिकै कपिदल साजि महान।
करिके बिजय बिजय दशमी दिन रघुबरकियो पयान४६८ ॥

हरिगीतीछन्द ॥

रघुबीर करतपयानदिशाजचार अति चिक्करतभे। सुर सिद्ध अरु गन्धर्ब गण मन मुदित जय जय करतभे। लखि सकलशोभा बिहंसि इमिसुग्रीव प्रभुदिशि हेरिकै ॥ कहते भये करि बचन रचनहि मुदित चित दुख गेरिकै ४६९ ॥

बरवै ॥

अतिहि अनीत करत प्रभु प्रगटप्रताप। तेहि मैं कहत जमेऊ यह मम अघ आप ४७० ॥

कवित्त ॥

रजभरि पुरवाप्रथम अवलोकि माहिंसुरकों कुपाय छच छाजन सों धौलधाम। सागरके हिये हौल डारि गिरि- धरदास भागीरथी धारकों उलटि पुनि याही नाम ॥ जनककी भूमि करो कांपित भयदशब्द सुर पुर भरी जानि बर बिसरामठाम। इति अनिरीति करिचले लंकाजीतिबे को धरम निधानहो परम सुनियत राम ४७१ ॥

दो० इमि पहुंचे सागरनिकट उतरे प्रभु सहसैन।
लखिसमुद्रकिमिउतरिहैं गुणिकपिभयेअचैन ४७२ ॥

चौपाई ॥

रावण सुन्यों रामको आवन। बोल्यो सभा बीच मन भावन। काकरतव्य प्रबल अरिआयो। सुनि निशिचारिन बचन सुनायो ४७३ ॥ नरबानर अहार मम अहैं। इनके हेतमंत्र काकहैं ॥ यहतौ विधिजापकत मसुकीनी। बिबिध बस्तु भोजन हित दीनी ४७४ ॥

दो० कहै बिभीषण अग्र से कहत अहित चित आनि।
जापकत ना आफतअहै कहऊ हिये अनुमानि ४७५ ॥

छन्द छन्द ॥

सिया देहुरामैं चहौक्षेम जौतात । महावीर सोविष्णु मानौ नहीं ख्यात ॥ खरै दूषनै बालि को मारिकै कौन । महादेव चापैं झटै खण्ड है कौन ४७६ ॥ कह्यौ कोप कै बंधुसों तत्त्वलंकेश । अरे दुष्ट तू छोड़िदै रच्छको देश ॥ कहै घातलैकै डरै बीरता छण्डि । बधौं राम को हौं छणै कोप कों मण्डि ४७७ ॥ कह्यौ भ्रातनै हन्नुमानै बध्यौ कौन ॥ अकेला गया जारि लङ्का सबै जौन । तबै बंधुनै बीस आखैं करीं लाल । कह्यौ तू चलै मूढ़ वा शत्रुकी चाल ४७८ ॥

तोटक ॥

सुनिबैन बिभीषण बंदिपगै । प्रभु पासचला चढ़ि ब्योम मगै ॥ हित संग सुमंत्रिन चारि लिये । प्रभु की दिशि मैं निज लक्ख दिये ४७९ ॥ तहं जाइ पुकारि सुबैन कहौं । हम राम शरन्न कृपाहि गहो ॥ सुनि ब्योम गिरा लखि ताहि सही । हरिसों खबरै बनरान कही ४८० ॥

दो० राज अनुज आयो मिलन का कारतबहै अब ।
कहहुसबै सुनिबै कहत कीश मुकुटमणितव ४८१ ॥
जौ वह शुद्ध शुभावहू अहै सुनहु गुण सिन्धु ।
विश्वासन कै योगनहिं तौहूं अरिको बन्धु ४८२ ॥
यदपि कही इमि कीश परि औरनहूं तेहिकाल ।
तदपि ताहि रखिबे चहे शरणागत प्रतिपाल४८३॥

शारंग छन्द ॥

मेरो करैगो कहा जौं बुरेभाय । आपै नशैगो सुनो कीश के राय ॥ ताकों बुलावों इहीहै मेरे चित्त । आयो तुरन्तै सुनन्तै सोई तित्त४८४ ॥ पावँपरो औ कहो आपनो हाल । लायो गरे राम नें ताहि ताकाल ॥ पूछी सबै शत्रुकी बात ता पासु । भाखो तबै रामजू सों कथा तासु ४८५ ॥ बाढ्यौ तबै हरिकै चित्तमें प्रेम । जान्यो बिभीषण मेरो भयो छेम ॥ स्वामी बिना आपके कांगमें पाय । दीजै बरै बुद्धिमो ना कहूं जाय ४८६ ॥

दो० दियो तिलक शिर आसुही दीनबंधु अवधेश।
पूजित मुनि बनचरणसों कहत सुनहुं लंकेश ४८७ ॥
चौपाई ॥
किमि जैये सागर के पार। सो सम्मति करिये निरधार ॥ तब करिकै विचार मति ऐन। मांगहु मग हमि बोले बैन ४८८ ॥ तब रघुबर सागर पै जाय। बैठे करि प्रणाम सतिभाय ॥ मगहि देहुजावैं जिमि पार। तुममम पुरुषा अहहु उदार ४८९ ॥ तब रावण को आयो चार। शारदूल नामकहु सियार ॥ नम देखतलाये गहि कीश। मारत भये लख्यो नर ईश ४९० ॥
दो० दीनो दूत छोड़ायकै गयो लंकपति पास।
कही कथा सब आपुनी कपिदलको इतिहास ४९१॥
चौपाई ॥
तीन दिवस इहि भांति बितानो। सागर नहिं आवत प्रभु जानो ॥ कर शर जोरि चाप संधानो। जलचर सह जलनिधि अकुलानो ४९२ ॥ सभय प्रणामकियो तहं आई। निरखि हंसे दयाल रघुराई ॥ शर सागर उत्तर दिशि मारो। तब करजोरि समुद्र उचारो ॥ छमाकरहु जड़जाति बिचारी। बिरचै सेतु नील बनचारी ॥ तापर होइ जाहु गुण आगर। इमिकहि गयो बंदिपद सागर ४९४॥ नील सैनपति नबहि बोलाई। बरण्यो सेतु बनावहुभाई॥ सब कपि गिरि पादपलै आवत। बिशुकरमा सुत सेतु बनावत ४९५ ॥
दो० बंध्यो सेतु दिन पांचमें निरखि मुदित चितराम।
चले सदल लंकालरन बंधुसहित अभिराम ४९६ ॥
चौपाई ॥
हनुमान चढ़ि राम बिराजे। उदय शिखर जिमि दिन पति छाजे ॥ अंगद पैं लछ्मण आसीन। जिमि बिधुमेरु शिखर छबि पीन४९७ ॥ पहुंचे पारजाइ रघुनाथ। गिरि सुबेल उतरेदल साथ ॥ तहं कपि सब अवलोकहिं लंका।

सुबरण दुर्ग बनी अति बंका ४९८ ॥ राम आगमन रावण जाने। चढ़यो भवन पर अमरष साने ॥ सुकसारनहिं बोलि दूत साज। पूछेउ ता छण निशिचर राज ४९९ ॥ ते तबदेंाउ रावणके धावन। लगे सकल हरिसैन बतावन ॥ सबकेईश अहैं सुग्रीव। अंगदबालि सुवनबल सींव ॥ ५०० ॥ केशरि कुमुद पनस नल घोर। सत बलि रंभतार ध्रुव बीर ॥ रभस सुखेनधूम्र धूम्रेच्छन। जामवान हनुमान प्रबल रन ५०१ ॥ गज गवाच्छ दधि बदन दरी सुख। गवय गंधमादन समरो न्मुख ॥ कोटिन कोटि अरबरूद खरब। आए अगणितबानर सरब ५०२॥ द्विविद मयंदभट सरभ प्रचंड। पालत सबन नील बरिबंड ॥ वह सोहत रघुबर के पास। राज अनुज कपि नायक खास ॥ ५०३ ॥

दे॰ श्याम तामरस नयन घन श्याम बरन श्रीराम।
पासअनुजबरगौरतन लछिमनविक्रमधाम ॥ ५०४ ॥
देऊ राम कहं जानकी करऊ अकंटक राज।
सुनिअतिकीन्होंकोपगुनिरावणभटसिरताज॥ ५०५॥

कुसुमस्तवकादंडक ॥

लखिकै दशशीशहि कोश प्रधान महा रिसिकै उछस्यो गिरि ऊपरसो। तहं जाइ सभा मधि कूदिपरो मनु बज्र सुराधिपको छुटिकै करसों ॥ शठ तू हरि नारि हरीछल की फलता करखै कहि क्रीट हरी सिरसों। उठि रावण कोपि भिरो भट संग लरे दोउ बारन बारन से चिरसों ५०६ ॥ करसों तलसों पुनि चंघन सों अरु मूकनसों रण घोरकरैं बलसों। उड़ि अंबर जाहिं धराहिं थिराहिं गहे निजदांवकरैं छलसों कलसों ॥ लरिकै इमि सत्रु मदैहरिकै हरिनाथ गए हरिपैं उड़िकै तबहीं। लखि रामलियो उरलाइ कह्योकिमि साहस कीनसखा इतनी अबहीं ५०७ ॥

दे॰ तब प्रभु आज्ञा पाइकै महा बुद्धि बलवंत।
गयोनिशाचर कांत पैं अंगद कूदि तुरंत ॥ ५०८ ॥

कांद छंद ॥

महाबीर बैठो सभामें प्रभावान । निरखि डरैं रक्षयोधा तजे सान ॥ तबै देखिकै अंगदै बुद्धिको ऐन । भयो बोलतो लंक स्वामी तहां बैन ॥ ५०९ ॥

चरणा दोहा ॥

कोतू अहै कहै सुनि अंगद मैंरघुबर को दास । कोरघुबर जिन हर धनु तोस्यो छण मैं बिना प्रयास ॥ को हर धनु जिन दुष्टन्हपन सुख थिरह्वै कारिख दीन । केहि हित जनकसुताके कारण जिनहिं जगत पतिलीन ५१० ॥ कातुव नाम नाम मम अंगद कौन पिता तव बालि । कौन बालि जिन बांधि धस्यौ तोहि तज्यो बचन निज पालि ॥ जाति कौन बानर हांहां पशु जिन जारी सबलंक । जाहि बांधि लायो ममसुत जिन हत्यो अक्ष निरशंक १११ ॥ केहिहित आयो जामें कछु दिन रहै विषयाबंस । कैसेरहै सौंपिसिय रामछिपाय परसु गतशंक ॥ बानर भल उपदेशकरैं जोंविधिं बस आवैचित्त । कोविधि जाके बर प्रभावसों करत अनीतिहि नित्त ५१२ ॥ कौन अनीति करी तियचोरी भयसों भूप कहाय । काकी भयसो दोउ बीरनकी कोदोउ कोशलराय ॥ नामकहा श्री राम लछमण हरिअहि महिजा शीश । सोई राम तबईश अरेतब सकलईशतबकोश ॥ हांहां हमज ने दे । उबालक दिये बनहिं पितुभेजि । सत्य सन्धि पितु उकरणकरनको आये दुख अंगेजि ५१४ ॥ कौन पिता दशरथ हम जानत तिय बस धरम न अन्य । कैसे कहत अधम जिन सत हित तजे तनय चैतन्य ॥ कौनजाति क्षत्री हांहां हम जानत नरसें होय । जामें अर्जुन एक जहां तू बंध्यो रह्यौ बङ्ररोय ५१५ ॥ सोइ अरजुन रिसि सुवन बीरनै जाको काटो शीश । रावण सोइ भृगु सुतहि छणक मैं जीत्यो रघुकुल ईश । अब भृगु सुत भये द्विज सत्य हरधनु तोरह्यो नष्ट ॥ सहा द्विज हम गुरु धनु गुणि नहिं तोस्यो ज्ञान सम्हद्र ५१६ ॥ झूठी सत्य मानि पूछऊं गुरु

धनुगुण छियो न चाहि । जनक कोखलै उठे जबहि तब
लख्यो न तू का चाहि ॥ बालि सखा मम कहां कीश जहं
प्रियपिय द्रोही जाहिं । कैसे मार्‍यो राम शरयाते भजुहित
गुनि मनि माहिं ५१७ ॥ अंगद बूड़ि मरत नहिं जलतू
वही रामको दास । आपुहि कहत रामयश मैंकिय पितु
आयसु बनवास ॥ उचित जनक वधवैर लेनतोहि शीश
रामको तोरि । जौंबल होय तोहितौ खै नत करि सुचा-
करोमोरि ५१८ ॥ रेशठ बोलु संभारि जीह निज नतरु
होत बिन प्राण । जाघर सही लात कपि कीतेहि जिन
जिन मार्‍यो इक बाण ॥ तासु प्रताप देखि नहिं देखत
निहचै आयो काल । अबहुं चेत नत ह्वैहै तेरो रणसन्मुख
रवहाल ५१९ ॥ बानर वचन सहत मैं तेरे नृपकी नीति
विचारि । वरणत निशिचर असन बड़ाई परम पुष्ट निर-
धारि ॥ खरसे चाकर कोटिन मेरे मर्‍यो प्रमादी सोय ।
बालिहि छिपिकै शायक मार्‍यो जामैं सकै नजोय ५२० ॥
दशरथसुतको कहा सराहत दृथा कीशकहुअन्य । लातमार
हमहने क्षणहिं जिनके पुरुषा अनरन्य ॥ रहे जेहि माया
कारहमलतिनको लिय मारि । कहाबड़ाई करतगयो मान्धाता
सो रणहारि ५२१ ॥ तीन वंश को निंदत निरलज लाजन
आवति क्रूर । जाकी उपमा देहिं जगत सो जाहिर जग
जिवसूर ॥ ५२२ जामैं भूपककुस्थ भये जो बैठि शक्रकेकन्ध ।
निशिचर अधम बधे बरदानव कोटिन किये कबन्ध ॥ जौंन
बंसमैं सगर भूप यह सागर जासु अगाध । जाके बल
तुम रहि अभय जेहि तरत भयो सुंह आध ५२३ ॥ जिन
दशरथ को अतिहि बिनय करि जांची शक्र सहाय ।
बधे अनेकन दनुज मनुज पतिकर कोदण्ड उठाय ॥ अम्ब-
रीष जाके कुल प्रगटे बिष्णु चक्र जिन काज । ईश अंश
दुरबासहि दीनो त्रास प्रथम पुनि लाज ५२४ ॥ जौंनवंश
मैं भये त्रिशंकू गुरुसों कछुक बिगारु । हठकरि गये नाक
अजहूं सो प्रगट नये यल चारु ॥ जहां भगीरथ भये न

जिन सम पुरुषारथी सुधौरु। निज पुरुषा सहकोटिन के जिन तारे जग सब ठौरु ५२५ ॥ कोसमर्थ कलमास पाद सम गुरु हित शापित वारि। लै पुनि धरन चेति अपने पदलीनो तुरतहि धारि ॥ तौनबंशको तूलघुबरणै रामहिं बालक अंध। जिनरण हते बालि खरदूषण त्रिशिर सुबाकुकबंध ५२६ ॥ हंसा दशानन दशन काढ़िकै बड़ी बड़ाई कीन। रण दुरबलन राम जिन मारे बहुविधि सो कहि दीन ॥ मान्धातहि हम मारि चुकेहे त्यागो मुनिके बैन। रविदिन उगेहमारी अज्ञा लंकामहाजिरेरैन ५२७ ॥ कौनबली सुर राज कक्षपै चढ़िक कृतस्य भये शूर। अलप अलप दश बीसक दानव मारेबढ़ग्रौ गरूर ॥ सागरखोदे कहा वीरता खोदहिं सदा मजूर। प्रजा बस्तु नृपकी गुणि हम तेहि राखो कोस हजूर ५२८ ॥ दशरथ सुनियत समर गिरे जब कोउ एक दानव बान। तव कैकई भरत को जननी रक्षा करी सुजान ॥ अम्बरीष को कहा पराक्रम राजऊ सके न राखि। तब पठयो हरि चक्र भ्रमे द्विजनिज अघ सोंसुख नाखि ५२९ ॥ प्रभुता कहा त्रिशंकू को जो जीवत भयो चण्डाल। परो अधोसुख सरग जात मग अजहुं अहै सोइ हाल ॥ बड़ीबड़ाई करी भगीरथ राज त्यागि मुनि होय। लाये गंग उधारे पुरुषा शूर कहां के सोय ५३० ॥ कहा कियो कल मास पाद जिन कारो कोनोपांव। गुरुके शाप निशाचर ह्वैकै बोरयौ कुलको नांव ॥ जानी है सब बंश बड़ाई रामहुं की पुरुषार्थ। महाबीर सुग्रीव विभीषण भये सहाय यथार्थ ५३१ ॥ एक बात करु अंगद तो मैं देऊं रामतोहिआज। रामहिंबांधि बोरु कपिपति सह तोहि सदा सुख साज ॥ अरे नीचतू बोलु रुम्हरिकै नातकतोशिर तोरि। जात आजुलै जनक सुताको लंकसिन्धु मह बोरि ॥ ५३२ ॥ बोलत वचन बज्रसे बानर जानन सार प्रताप। जाडर अजहुं डरत यम सुरपति तिहुं पुर.जाहिरदाप ॥ मेरे भुज मदण्ड सरिस लखुये प्रचण्ड तरु बीस। जातेंमरे

महाब्दप कोटिन गये प्रेत पुरकीम ५३३ ॥ यदपिमरे सुरलोक रमतते पूछेंगे ाजवगाय। अजहुंन तिनके साख हृदे की गई रहीअतिछाय ॥ भुजप्रताप जानत सबदिगपति भले गिरिस गिरि जान। जो मम कर गज पुष्कर पुर बिलस्यो पुष्कर अनुमान ५३४ ॥ हरी अमरनर किन्नर कन्या भुज प्रताप मथिलोक। अजहुंअहै पद पठक समयको शेष कमठ हिय साक ॥ जानत सुरपनोमम गिरधरगर अरप्यो बहुजाहि। कोटिकोटि मनमुदित अगिनिमेंहोमकिये चितचाहि ५३५ जानत जग प्रताप सब जाको ताहि निदरि शठ कीस। पुनिपुनि करतबड़ाई नरकी नितभोजन दशबीस ॥ समुझि बोलुतें बाल बालमति जान न मोर प्रभाव। जौं रघुनाथ सुर तौ केहि हित पठयो दूतमचाव ५३६ ॥ कैसे कहत रामकों पायो निजसुखनिज बड़पन्न। कौन कामल धुकपि मम छुकिय कहतजु आयहिधन्न ॥ शिवको शैल उखास्यौ यातें भयो महाबलवंत। कोटिनकपिशिशु शैल उखारहिं सेतु देखु खलकंत ५३७ ॥ कोटो गरो सुरपन बरणतहंसी होति चितमोहि। ए कटकापर मूड़ चिरोशिर चीरैं सुर कि सोहि ॥ बड़ो प्रताप कियो जग जाहिर कांधी जैसी लीक। महस बाहुबलि बाली बामन इनहिं जिते जिमि ठीक ५३८ ॥ एक बात हम सुनी कहत तेहि यदपिहो तिहै लाज। तदपिकहत तुवढीठपनो लखि तासों रावण आज ॥ गयो कोउ पुर तू न्दपजीतन तहंको इकतियबूढ़। पटक्यौ सिंधु सुमन सम जहंसों लाजनि आयोमूढ़ ५३९ ॥ नहिं जानत रघुबीर प्रभावहि निरलज बकत इयाहि। जानैं बधे बालि आदिक भटहर धनुभंज्यो चाहि ॥ बांध्यो सेतु सिंधुको छणमें बेधे सातऊसाल ॥ जाको दूत एकपुर जास्यो भयो अच्छको काल ५४० ॥ हनुमान सु ह भंजि तिहारो गयो इते भटमारि। तदपि कहत तू टेक अपनी आपुहि बड़ो बिचारि ॥ निरलज महा और तोसोजग रावणअहैनकोय। आएहम तुवभलो करनसो रह्यौ मरन

वस होय ५४१॥ रे कपि कहा सूरपन कीनो कहत इतो
जो बात। बैठे सालकरी सो चेटक बालि बधन विख्यात॥
हनूमान नै लंका जारीजरी पाइ रुखमोर। बालक अक्ष
वध्यो इतउत सो कूदि चपल ज्यों चोर ५४२ कौन करी
सूरता समरमें बांध्यो वासव जीत। लातन हते निशाचर
नारिकन सैं देखि अति भीत॥ दूत जानि उर आनि दया
अति दीनो ताहि छोड़ाय। नातर जातोयम केमंदिर बाल
प्रहार न पाय ५४३॥ सांचि कही दसभाल कियो नहिं
हनुमान कछु हाल। दोयगाल के बज्र लवार जग तोहि
तौइ दस गाल॥ देखु राम किंकर कोमहिमा बांधयो
सिंधु अगाधु॥ अजहु साल इनके जिय में जे बैठे इहां अ-
साधु ५४४॥ कहै दशानन सिंधु पार बहु जाहिं गीध सुक
काक॥ तासों बली कहावत राउरि भाग्यो जौनवराक॥
एक चपलता करी सही छपि निकरि गयो सो पोच॥ दूत
जानि हम खोजहु नाकिय सो कछु अहै न सोच ५४५॥
बार बार रघुवर बल बरणत जाके कीश सहाय॥ मोहि
नहिं लखत जगत जाको डर कांपत सांच सुभाय॥ कुम्भ
करण मम बंधु महाबल जगत जीतिबे जोग॥ सुत घन नाद
इंद्र जिन बांध्यो देखत सब सुर लोग॥ ५४६॥ संची प्रगट
प्रहस्त महा बल सुर जीते रण लच्छ। देवांतक अति काय
नरांतक इक इक बली प्रतच्छ॥ सो रावण कहं तुच्छ करत
नर भिक्षुकी करत बड़ाय। काढ़यो जनक जाहि बनमें पुनि
बैठो नारि गंवाय॥ ५४७ रे शठ जब दशशिर प्रभु शरसों
रण में गिरि है आइ॥ तब तू उचित सिखावन मनि है
सिखोत्यार लैजाइ॥ एई सिर हर चरण परे अब एई ह्वैहैं
छार। किये अहार अमित पशु पशुवत् पशुको होइ अहा-
र ५४८॥ जिमि तू हरी दार सुरगणकी तिमि शठ तेरी
दार। पकरि पकरिकै बानर करिहैं याही लंक विहार॥
तेरे पाप लंक तौ जाती आजुहि सागर माहिं। भयोभूप
सत्यंत विभीषण यासों यह गति नाहिं ५४९॥ जो तू

करी शिवा वर पूजा निज करि शिरन उतारि । ते शिर
सांच सिवार खींचिहैं रण महिं परे निहारि ॥ रे रावण
तप करि बर लहिकै करिकै इतो प्रताप । क्यों सह पुत्र
मरण चाहत अब धारि भयंकर पाप ५५० इन्द्रजित अरु
कुम्भकरण ए अहैं मरण सुख सर्व । जिनको पति तू अंध
भयो असकरत बिष्णु सों गर्व ॥ जाको बल शिव प्रलयकाल
मैं तोसैं मेमैं जालु । सोइ रघुनाथ लंक आये शठ अवहुं
चरण परमालु ५५१ ॥ इतो बढ़ाइ नाम सब पुरमैं तरि
सुर सैन समुद्र । बूड़न चहत बांधि गर पाथर पाप कूप
मैं क्षुद्र ॥ ये शिर तेरे कंदुक ऐसे जबहिं चलै हैं कीश ।
राम बैरफल तोहि सांचतब सूझिपरिहि दशशीश ५५२ ॥
कोऊ होय सपूत वंशमैं निज घरराखै सोइ । मई आजुसो
सांचसुनी जो अनुज बदन कहं जोइ ॥ एक बिभीषण जन्यो
बिसवा तासौं बांची लंक । ना तरु तेरे संग सिधारति
रहत न नामऊं अंक ५५३ ॥ मोहि यहि हेत कृपा निधि
पठयो सोचि समुझ दशशीश । सब प्रकार तोसों रण
अनुचित कहं लग कहुं लग ईश ॥ चोर लबार कुमारग
गामी मद्यप मांस अहार । बिप्र बन्धु पुनि भ्रष्ट दुष्ट शठ
निरलज कुमति गंवार ५५४ ॥ जोकछु कहे सुनेमाने भलतो
कत कीजिय रोस । होयकाम अपनो अरु छूटे तो मारण
को दोस ॥ जौं कदाचि नहिं कालनिकट तौ आवै यह
मतितोहि । छोड़ि बैर आ राघव जी सों सोमानो मति
मोहि ५५५ ॥ तातें पठयो राम महाबल समुझायो
सुग्रीव । नहिं मानत तौ आजहाल तुव होइ सोइ दश
ग्रीव ॥ जौंकरि जनक सुताकों आगे करते आयुध नाखि ।
चल प्रभुपैसो अबऊं छांड़ि हैं मैं वरणत करि साखि ५५६ ॥
सुनिकपि वचन महा रिसि भरिकै उठो कहत यह वैन ।
पकरि अबहिं बांधहु इहि कीशहिजाननपावै ऐन ॥ अंगद
अंगद सों दिशि सों मिलि काटि खाहु फल तुल्ल । बकत
वायु बस इथा विपिन चर बुद्धि विगत शठ कुल्ल ५५७ ॥

सुनि सो वचन कीश पति नंद कट कटाइ अति क्रोधि। मारित माचन मुकुट गिराये हने अपर भटसोधि॥ रेशठ जैां अस बुद्धि तिहारी चरणहों मैं यहिठाम। स्यार गीध गहि गहितन खैहैं रगरऐहैं जब राम५५८॥ जय रघुबीर लषण अरि मरदन सब समर्थ बलसींव। बालि अनुज बन दनुज दहन शिखि जय कपि पति सुग्रींव॥ इमि कहि मुकुट रासके दिशि के मरदि सभासद सर्ब। चल्यो गगन जिमि तरुण केशरी बालि सुवन तेहि पर्व ५५९॥

दो० कहे रामपद बंदिकै दशमुखके हत्तान्त।
दशशिरकेशिरकेमुकुट निरखिमुदितजगकान्त ५६०॥

बरवा दोहा॥

अंगद तुम कहं धन्य धन्य जग तुमसों बली न अन्य। चरणमैं मुकुट लिये रावण के जो भटमहं वर गन्य ५६१॥

दो० जामवन्त सों पूछिकै अज्ञादई उदार।
घेरहु मरकट बिकट सब लंकाचारहु द्वार ५६२॥

सो० उतरि सुवेल रमेश साजि कटक लच्छ्मण सहित।
कीनो नगर प्रवेश करियन रावण बेधनका ५६३॥

कवित्त॥

साजिदल लंकामैं प्रवेशे देत डंकाराम अरिन अशंका कपिमारैं धौल धप्प धप्प। तासमे प्रचण्ड पैान छपे मारतण्ड दश शीश को घमण्ड गयो छाती करै लप्प लप्प॥ गिरिधरदास चारि दिग्गज चिकारि रहे रहेगिरशिखर विखरि गिरि झप्प झप्प। छितिधर छितिभार फणछिति राय रह्यो कच्छप छपाय चारों पायकरैं छप्प छप्प ५६४॥

दो० घेर्‍यो पुर चारहु दिशा मरकट विकट स्वरूप।
जिमि त्र्यगवन घेरैमहानिज दलले त्र्यगभूप॥ ५६५॥

चौपाई॥

फाटक डारे तोरि लंगूरन। कीश विकट चढ़ि गए कंगूरन॥ चटक्ल्ह हन्द गिरि पादप गहिगहि॥ धाए दिशन मारू धरु कहि कहि ५६६॥ रावण सुनी खबर निरशंक।

घेरि लई कपि चहुँकन लंक ॥ आयसु दई सजावहु सैन। मारहु जाय कपिन बल ऐन ५६७ ॥ सुनि सब वीर शस्त्र कर धरि धरि। चले आरु धरु ध्वनि दिशि भरि भरि ॥ जय रघुनाथ कहहिं सब कीश। निशिचर बोलहिं जय दशशीश ५६८ ॥ चारहु द्वार विकटभट जूटे। लरहिं घोर संगर रसलूटे ॥ कोटिन कटे चरणकर मुण्ड। डोलहिं बहु कबंध के झुण्ड ५६९ ॥ घूमन लगे ग्रामहरि कंक। रपटनलगे वीरपलपंक ॥ तेहि खणदुसह कपिनकी मारि। सहिनहिं सकत भए निशिचारि ५७० ॥ तबहिं कोप करि रावणपूत। गरजेउ मेघमरिस मजबूत ॥ लागेउ बाण बज्र से त्यागन। भिदिभिदिकीश लगेमहि लागन ५७१ ॥ महाबली निशिचर सिर ताज। बेधे अमित वीर जयकाज ॥ तब रघुनाथ बाण संधाने। मारेते अरि हृदय समाने ॥ ५७२ ॥

दो० तिनते अरदित होय कै जात भयो अकाश।
कह्योगरजि तहंतेंप्रबल मैंतुव करत विनाश ५७३ ॥

चौपाई ॥

इमिकहि विशिष बज्रसे चुनिचुनि। बरषन लग्यो चाप निज धुनि धुनि ॥ मेघ सरिस गरजत परचण्ड। जल सम बर्षत बाण अखण्ड ५७४ ॥ विज्जु सरिस चमकावत चाप। सावन सरिस लस्यो गहि दाप ॥ तब अहि फांस फेंकि विकराल। बांधे बेगि दोऊ क्षितिपाल ५७५ ॥

दो० दोउन भूमि गिराइ इमि गरजि बज्र समबान।
बरषि बरषि बेधे सकल बानर यूथ प्रधान ५७६ ॥
इमि परदल अति विपति दै प्रविश्यो लंका देश।
इत दुखलखि बंधनहस्यो आतुर आइखगेश ५७७ ॥

चौपाई ॥

सुनि रावण सो अतिहि रिसायो। धूम्र नयन कहं लरन पठायो ॥ ताकहं हनूमान रण मारो। मानहुं रौद्र भयानक पारो ५७८ ॥ बज्रदन्त पुनिपठयो योधा। चल्यो संग दल लै भरि क्रोधा ॥ ताकों अंगद हन्यो समर छिमि।

तेज पुंज तम पुंजहि रण जिमि ५७९ ॥ इकुरि अकंपन आयो धूत। तासों भिरो पवनको पूत॥ तेदोउ लरन लसे रण कैसे। गैरिकगिरि कज्जल गिरिजैसे ५८०॥ सोऊ मरयौ सुन्यो दश शीश। पठयो रण प्रहस्त दल ईश॥ महा सैन लै आयो तौन। भिरो नील बढ़ि अति बल भौन ५८१॥ तिनके लरत बढ़ी छवि कैसे। भिरे उभय मरकत गिरि जैसे॥ कछुक काल लरि शूर प्रहस्त। संध्या नील पाइ भो अस्त ५८२॥ मरेनाथ सबसैन परानी। रावण सुन्यौ मरयौ सैनानी॥ परम कोप भरि लई उसास। चलेउ आप रण चित गत त्रास ५८३॥

दो॰ महा सैन लंकेश की लखि पूछेउ गुण सिंधु।
नामसहित सबकोकह्यौ तबहिं दशानन बंधु ५८४॥

नराच छन्द॥

तुरत बाण एक शीश ईश के हिये हयो। सुमेरु शृंग तुल्य सोगिराय भूमि मैंदयो॥ गजादि बानरानको अनेक बाणमारिकै। विटपछिन्नमूलसेदियेधराहिंडारिकै ६८५॥ बहोरि मूक मारिकै हनूमतै बड़ी भलो। गिराइ भूमि नील कोस बेग राम पैं चलो॥ प्रचारि मध्य शेषनै अशेष तीरमारिकै। अचेतकैदशाननैदियो धराहिंडारिकै ५८६॥

दो॰ चेति शक्ति कहं कर लई दई ताहि विधि आप।
हनी ताहि लागेफनी गिरे धरणि सहताप ५८७॥

बरवा दोहा॥

लग्यो उठावन उठै न सहि धर लखि आये हनुमान।
धरणिधारि निशिचरहिलषण लैगये जहांनरचान ५८८॥

तोटक॥

रघुनायक शायकमारिवरे। दशकन्धरशीश किरीटहरे॥ तब देखि महाकृप त्रास भयो। घरको दशकन्धर भागि गयो ५७९॥ इत राघव बंधु असल्य करो। कपि के दल में अति मोद भरो॥ सुनि सो धुनिकै दश शीश गिरै। दूसि बात कही मन सोचि चिरै ५९०॥

दो० बिधि बिपरीत भयो अब होन चहत सिय बैन।
तातें जाइ जगावहुं कुम्भकरण बल ऐन ५९० ॥

चौपाई ॥

बहुतयतन सों जागतभयो। कुम्भकरण रावण पैंगयो॥
कोटिनमहिषबरेमदभरे॥ लाइअसन हितआगेधरे ५९२॥
भोजन करि मद व्याकुल नैन। कुम्भकरण इमि बोलोबैन॥
तात कहहु केहि हेत जगायो। रावण सब वृत्तान्त सुना-
यो ५९३ बोलोकुंभकरणके बैन। अरुणभये सबननके नैन॥
जौं समरथ तौ नद बर ढंग। जाइ सुतन मिलु लहु अरि
संग॥ ५९५॥ मैं मारि हों राम बल सानो। रावण
हसितअनुज जियजानो॥ कहतबचन मैं तुमहित लागि।
जमिहौं राम हतहि रण आगि ५९६॥ इमि कहिचलो
बंदि पद दोय। रावण कंठ लगायो सोय॥ शूल धरे कर
कछु दल संग। कुम्भकरण सोहौ बर ढंग ५९७॥ देखेउ
कपिन ताहि जबआवत। सडर भये दशदिशा सिधावत॥
कोउ कहै रावण हित आज। आवत लखहु आप यम-
राज॥ ५९८ कोउ कहै उठ्यो पुनि बिन्धु। रावण के हित
बिक्रम सिन्धु॥ कोउ कहै धारि तन काल। आवत लीने
शूल बिशाल ५९९। कोउ कहै वृत्रासुर जियो। सो वनचर
मारण पन कियो॥ इमि कहि कहि कपि भागन लागे।
अंगद तबहिं भिरे बढ़ि आगे ६००॥

दो० तमकि एक मूको हनो परो सैन सम घूमि।
तातेदबि दोउ दिशि सुभटगये घनेपिसि भूमि ६०१॥
उठि युवराजादिक कपिन आतुर अवनि गिराइ।
मरदिकरोरन कांखमहं दाबिचलो कपिराइ ६०२॥

सो० मग महं चेति सुजान निकरि शत्रु की कांख सों।
काटिनाक अरुकान गरजिगयो रघुनाथढिग ६०३॥

हरिगीती छन्द॥

रघुनाथ ढिगलखि जातकोशहि फिरेउ निशिचर जोर
सों। गहि बिकट कोटिन सुभट खवत चात घन सम सोर

सों ॥ जहंजहं पसारत हाथ तहंतहं कालको करफिरत है। गिरि गुहा सलभ समाहिं जिमि इमि तहां उपमा थिरत है ६०४ ॥ बहु भटन मलि निज अंग बहुतन खाय बहुतन पटकिकै। निज मूल मास्यो हनुमतै तिन तोर डास्यो झटकिकै ॥ हनुमान मूक प्रहार सों कछु विकल ह्वै रणमें बली। करिकर प्रहार हनुमतै गति सुधि कियों संगर थली ६०५ ॥ लखि तासु रूर अचर्ज जुत रघुनाथ कहत बिभीषणै। यह कौन जो बहु कोश खाये मरदि अंगन सो हनै ॥ यह बंधु मम दश शीश छोटो कुंभकरण प्रसिद्ध है। जिमि अगिनि सूखे बनहिं बनचर रणहि इमि बलसों दहै ६०६ ॥ पुनि निरखि आगत सैन लछ्मण अमित शायक मारहीं। ते सरप से पर दरप धरतन श्याम न-गहि सिधारहीं ॥ चढ़ि जाहिं कोटिन कीश तन परशैल पै स्रग बालसे। मलि मलि तहांहीं हनत तिनको सहत शर चर व्यालसे ६०७ ॥ बहु कीश बदन समाहिंते दरशाहिं तम सइं द्रव्यसे। मुख कारणतें बहुकटहिं ससि गिरिगुहा धातुन से लसे ॥ सरदन रण कपि दिशनि बढ़ि भुज गहि धरत मुख लसंतयों। जल सभै सावन सांझि लोपत दौरि घन गन बेगिज्यों ६०८ ॥ तेहि सकल कपिदल दलत लखि रघुनाथ धनु संधानिकै। कथि अमित निशिचर सात शर तेहि हने स्रुति लौं तानिकै ॥ गिरि सहित हाथन काटि पुनि सिरतासु हरि परि हरत भे। लखि भगे डरि निशि-चर सकल सुरकीश जय जय करत भे ६०९ ॥

दो० कुम्भकरण को मरण सुनि मुरछि परो दशशीश।
अतिबिलापकरबे लग्यो तापभस्यो खगईश ६१० ॥

चरणा दोहा ॥

देवान्तक अति काय नरांतकबीर। बाजि चढ़ो रण घू-मत सूर सरिस द्युति धीर ६१३ ॥

दो० महा पार्श्व मास्यौ रिसभ मनुजांतकं युवराज।
महा उदर देवांतकहि नीलकु कपिशिरताज ६१४ ॥

त्रिशिरा के शिर तीनहूं काटे पवनकुमार।
लषणहतेउ अतिकायकों कायमरपि शरधार ॥१५॥

सो० तिनको मरण सुनत्त भयो कोपवस रक्षपति।
तब घननाद तुरन्त पनकरिचलो सुधारिधनु ॥१६॥

दो० प्रफुलित जये रसाल रण पञ्चबन्तसमुदाय।
चलो चैत निशिचर कुंवर के सुधरे छबिछाय ॥१७॥
करत शरण सह अरिनकों छीन तापकर रूप।
पीना राति महीनकर भट बैशाख अनूप ॥१८॥
अपने करसों करसकै जीवन लेतो सूर।
सम दुसमन कोकिल सुखर जेठअसुर सगरूर ॥१९॥
संग जलद सैनाये अंबर शोभा गाढ़।
शिखिआनन्दित चितचलो इन्द्रजीत आषाढ़ ॥२०॥
आप निरन्तर बरसतो सर सिलिसी सुख इन्द।
तम छावन सावन चल्यो असुर नन्दमानन्द ॥२१॥
शूर सिंह शोभन करन निशिदिन जान अलच्छ।
पूरब पर भंजन प्रबल चलो भाद्र पद रच्छ ॥२२॥
अंबर घटा बनको मबै भांति.घटी जहं चारु।
परजातादिप्रफुल्ल लखिकुनप कुमारकुआरु ॥२३॥
अति उज्जल तरवारि कर उज्जल अंबर वंत।
पद्ममहिप्रमुदित धरतवर कातिककौनपकंत ॥२४॥
सगी सरनिसारंग समन कुंदन लसत न फांस।
तीच्छणकरकरमन्दकर निशिचरमारगशीस ॥२५॥
सीता कर सके देन तन सुख जग रंग रसवंत।
निज बलमहि कंपन चलो पूस पलादका कन्त ॥२६॥
सरसों खेत रंगत्त बर राग बेहार धरत्त।
चलो माघ रावनि समर कर करण पितुसत्त ॥३१॥
तेजकाल हिमकाल सम बिबिध मारि प्रियरूप।
जग उनमत्त करन चलो फागुन घर भट भूप ॥२८॥

चौपाई॥

ब्रह्म अस्त्रतें सबहिन मारा। परी भूमि कपि भालु

कतारा ॥ गिरे राम लक्ष्मण दोउ भाई। चेत रहित जय आस भुलाई ६२९ ॥ मेघनाद पर सैन निहारी। मनुबहु-मता तुहिन की मारी ॥ गयो विजय लहि घर घननाद। इत विभीषणहिं भयो विषाद ६३० ॥ हनूमान औषधि गिरिलाये। हरि गण सहहरि उठे सुहाये ॥ पुनि कपि मिलि सिगरे निरशंक। दूजी बार दही सब लंक ६३१ ॥

छप्पय ॥

पठये कुम्भनि कुम्भ चले लै असुर संघको। शोणिताक्ष यूपाक्ष लिए कंपन प्रजंघ को ॥ तिन कहं आवत देखि कंप नहिं अंगद अरह्यो। शोणिताक्ष कहं द्विविद मैंद यूपाक्षहि मरह्यो ॥ तब जंघ प्रहारि प्रजंघ को कियो प्राण विन कीश पति। पुनि कुम्भ सरिस सिर कुंभ को फोस्यौ मारि प्रहार अति ६४२ ॥

रोला छन्द ॥

कुंभकरण कुमार बीर निकुंभ को हनुमान। पक्वफल सम तोरि सिर यमलोक पठयेप्राण। खरसुवन मकराक्ष पठयो तब निशाचर नाथ। ताहि पठयो राम लखि घर पास निजशर साथ ६३३ ॥

दो० इमि बीरनको नाशसुनि पितहि दुखितलखि अक्ष।
बहुत बुझाइ सुरेश जितगयो करनको यक्ष ६३४ ॥
बैठोजाइ निकुंभिला साज्यो यज्ञ निहाल।
खबरिपाइ रघुनाथसों कह्यौ बिभीषणहाल ६३५ ॥

चौपाई ॥

नाथ यज्ञ जौं पूरो होई। तौन मरै काहू सों सोई ॥ तासों बेगि पठाइय भाई। मारैं तेहिकरि दुसह लराई ॥ ६३६ ॥ बच्यो एक यह रघुकुल ईश। याके मरे मस्यो दश शीश ॥ इही एक तिहुं पुर भय मण्डन। सुरपति आदि बीर बल खण्डन ६३७ ॥ तब रघुनाथ अनुज समुझायो। बिजय करहु यह भाषि पठायो ॥ प्रभु पद बंदि कटकलै संग। लक्ष्मण चले करन बरजंग ६३८ ॥ संग बिभीषण

कीश प्रधान। जामवान अंगद हनुमान ॥ जाइ लख्यो हारे दल भारी। बध्यो ताहि शर अमित प्रहारी ६३९ ॥
दो० कीश यज्ञ नाशन लगे चढ़ि चढ़ि मन्दिर ओर।
लखिनिजदलकीदुरदशा उठेउइन्द्र जितघोर ३४० ॥
बैठि सुरथ टंकारि धनु संग सुभट समुदाय।
गयो लक्ष्मण सामुहें बंदि उमापति पाय ६४१ ॥
चौपाई ॥
लाग्यो तजनबाण विधि नाना। गरजत घनसम असुर प्रधाना ॥ जे कपि जाहिं शक्रजित आगे। ते महि परहिं प्राण परित्यागे ६४२ ॥ तिमि लक्ष्मण सन्मुख जे जाहीं। तेनिशिचर यम बदन समाहीं ॥ चहुंदिशि शरही शरहि दिखाहीं। शरसों रहित दिशा कोउ नाहीं ५४३ ॥ तेहि क्षण देखि बिभीषण आगे। इन्द्रजीत कह अधम अभागे ॥ पितु प्रताप करि ऐश अनेकन। डरि शठ मिल्यौ अरिहि हरि टेकन ६४४ ॥ ताको फल तोहि मिलि है अवहीं। जैहै प्रेत लोक तू अबही ॥ कहै बिभीषण जनक समेत। आसु जातरबि सुवननिकेत ६४५ ॥ भयो काल बस जनक तिहारो। मानत नीति धरम नहिं भारो ॥ एक पिताके या पातिहारे। गये घने अरु जैहैं मारे ६४६ ॥ इमि इनि बाण तजे बहुतेरे। सहि तेहि कपि पहुंचे यमनेरे ॥ बज्र समान चाप टंकारी। मारे बिशिख सर्प से भारी ६४७ ॥ तब लक्ष्मणआगे तहंबढ़िकै। बरषे शायकइतलखु पढ़िकै ॥ इन्द्रजीत लक्ष्मण रण भारी। देखहिं सिद्ध अमर मुनि भारी ६४८ ॥
दो० तेहि क्षण लक्ष्मण रामको उर धरि ध्यान तुरंत।
काटि तासु शिरबाणतें फेंकिदियो दिगअन्त६४९ ॥
देव कुसुम बरसन लगे दुंदभि बजी अकाश।
पूजित सुर बनचरनसों लषण गये प्रभुपास ६५० ॥
रामलियो उर लायकै मुदित कहत बहुधन्य।
कियो काजयहि करिसकै तुम बिनकोभट अन्य ६५१ ॥

चौपाई ॥

सुत बध सुनि रावण बिलखाने । गिरो धरणि अस्ताचल मानो ॥ हा सुत सकल भुवन मद हरण । अद्भुत करम समर महं करण ६५२ ॥ जो मोहि कह्यौ बिभीषण आगे । मैं नहिं सुन्यो नीति गुण त्यागे ॥ कुंभकरण बहु बिधि समुझायो । सो फल अब मम सनमुख आयो ६५३ ॥ तातें जियन उचित मोहि नाहिं । बंधु सुवन बिन बसुधा माहिं ॥ इमि बहु बिलपि पठाई सैन । पठई राम ताहि यमऐन ६५४ ॥ इहां भयंकर दुखतें भारी । कहत कन्ततें मन्दोदरी ॥ नाहकहो बहुसो नहिं माने । राम बैर कुल कुलिश माने ६५५ ॥ अजहुं देहु सीता परिचरण । भोगहु राज्य सहित निशिचरण ॥ देखहु जहं तहं रोवहिं नारी । दै दै तुमहिं अनेकनि गारी ६५६ ॥ यापापी सब लंकाबोरी । सबनि मारि मरिहै तिय चोरी ॥ तातें अबहुं गहौ मति रूरी । कछु दिन कन्त रहै करचूरी ६५७ ॥ जीति जगत अतिही यश लयो । इक तिय हेत मूल सह गयो ॥ नहिं लाये यह नारि जानकी । प्रस्थानी सब जान जानकी ६५८ ॥ सुनितिय बचन बिहंसि कह ऐसे । रिपु संग होय मित्रता कैसे । तैंतिय करति शोचबिनकामहिं ॥ आजुबधत मैंलछमण रामहिं ६५९ ॥ रोइ चरण पूरि बचन बखाना । मति भ्रम कन्तभई मैं जाना ॥ तब रावण बहुबिधि समुझाई । चलेउ राम सों करन लराई ६६० ॥

दो० चलत अमित असगुन भये ताहि निदरि सहचैन ।
चल्यो दशानन सैन लै महा गर्वको ऐन ६६१ ॥

गंगोदकी छन्द ॥

आवनो तासु जान्यो जबै कोपिकै चोपिकै कीशके छन्द धाये सबै । मारिकै हल्ल औ सेल चारौं दिशा पूरि दीनी धरा युद्धकेरी सबै ॥ देखि सो बीसहू नैनकों लालकै चाप टंकारि देवारि बर्षो शरै । काटिकै माथ औ हाथ को टाह्निकै भूमिमें पाटि मारै धरै यों करै ६६२ ॥

मालिनी छन्द॥

दश धनुकर धारे। बिज्जुलौं तेजवारे॥ दश दिशि शर भारे। पूरि दीनेगरारे॥ कपिगणमतवारे। जातहीं जाहिं मारे॥ अति डरसहसारे। होय भागैं बिचारे ६६३॥ इमि दलहि भगायो। काललौं तेजछायो॥ शिविसुत सुतजायो। जीव आनन्द पायो॥ अब सबन डरायो। चित्त रामौ डरायो॥ सुभट दल परायो। सिंधु पारै सिधायो ६६४॥

दो० इमि विचारि बर्ष्यो बक्रुरि बज्रसरि सरच्छ।
तवसमच्छ आए लरनरणहिं लक्ष मनदच्छ ६६५॥

शिखरनी॥

भिरयौ भारी योधा नवरगरजो धारि शुरता। तजेभारे कारे सरप शरलीने चतुरता॥ धरा चाता भ्राता धनुष धरिसोहै समरमैं। लरैदंती मानोसित असित ताहीठहरमैं ६६६॥ तहां देख्योभाई अतिहिरिसि आई असुरकों। चलाई सो शक्ती विधि दयेउ जोताकि उरकों॥ तबैआड़ो कीनो अरि अनुज सर्पै शरनमैं। लई आगे ह्वै कैतेहि समुझिकै ताहि छण मैं ६६७॥

दो० परेधरणि गतचेत ह्वै लखिप्रभुभए उदास।
हनुमत लाए द्रोणगिरि गई हृदयकी चास ६६८॥

चौपाई॥

रामभिरे रावण सों तबहीं। सबन कहो इहि मारत अबहीं॥ तेहिछण विरथ देखि रण पथही। शक्र पठायो अपने रथही ६६९॥ तापर बैठि सूर कुलसूर। भिरे भिरैं जिमि तमसों सूर॥ जिमि बरषत दशकन्धर बाण। तिमि तिमि काटत रघुकुल त्राण ६७०॥ रावण के दशधनु अति चमकहिं। जिमिघन करदस दामिनि दमकहिं॥ तबरघुबर दशबाण प्रहारे। काटि शीस सब भूमहि डारे ६७१॥ तेपुनिकटे कांधतें कैसे। छाया शिरकाटतहीं जैसे। पुनिशर सों भुज काटि पवारे। तेऊ कढ़े प्रथम से भारे ६७२॥ इमि कर शिरकाटत प्रगटाहीं। लखि लखि बानर शोच

समाहीं ॥ तब रावण माया विस्तारी। व्याकुल भए सबै बनचारी ६७३ ॥ शर परि हरि हरि हरी नवीनी। तब रावण उपाय करलीनी ॥ तातें मातलिको उरभेदो। सो गत चेत परो रणखेदो ६७४ ॥ समर लखहिं सुर किन्नर सबहीं। सहमहिं कढ़त शीस भुज जबहीं ॥ कोकवि जो सब रण सकाई। वरणै रावण राम लराई ६७५ ॥

दो० शरकर लीनो बधनहित हरषिब्रह्म समघोर।
जिहिलखितिहुंपुरथरथरैअशुभभयेचहुंओर ६७६ ॥

कवित्त ॥

शोककपि हियसों विचार विधि नियसों सुहाग भाग शुद्ध मंदोदरी के बदनसों। भार भूमि मंडल खभार सुनि मंडलसों मेरो भक्तपापी शोच शैलनार मनुसों ॥ गिरिधर दास भयो साथहो विलगवाण रघुबर धनुप्राण रावण के तनुसों। ताप सुर गणसों प्रताप दैत जनसों विलाप सिय मनसों सोपुरपाप पनसों ६७७ ॥ धरापैं अप्राण पराजीती सब धराजानै काटि दशगरा पाए वरवर ईश के। छोयकै निशंक कंक घींचें आंत अंबरलों जाकी शंक उरसुर ईश धनाधीश के ॥ गिरिधर दास भनै कालको प्रताप आजु देखो अनहोनी रच्यो मारै कर कीशके। काटे नर ईशके सहित भुज बीसके सुदीसै दस दीस दस दीस दस सीसके ६७८ ॥

दो० देव कुसुम बरषण लगे भयो अतिहि आनन्द।
मिले मुदित सुग्रीव सों प्रेम भरे रघुनन्द ६७९ ॥
अंक बिभीषण लाइकै भेटे पवन कुमार।
मिलि अंगद सौमित्र सों राजे मुदित उदार ६८० ॥

चौपाई ॥

रावण मरण सुनत सब रानी। आईं रोवत अति दुख सानी ॥ हासम कान्त कह्यो नहिं मानी। सोइ फल प्रगट भयो जिय हानी ६८१ ॥ नाथ अनुज करकहा न माना। मैं भुव गुना काल नियराना ॥ हरीसिया तुम छलअपानी।

कपि प्रभु तानि रखीनहिं मानी ६८२ ॥ जीति सकल जग भुजपरताप । मरे अनाथ सरिस अब आप ॥ जासु वंश पूरेउ जग सारो । रह्यो न कोउ कुल रोवन हारो ६८३ ॥ इमि लखि तिन को रुदन विभीषन । रोये गहि अग्रज के भोसन ॥ तब रघुनाथ ज्ञान दैसही । क्रिया करहु विधिवत यह कही ६८४ ॥ सुनि लंकेश राज बिधि साध । दाह कियो रजनीचर नाथ ॥ चितै चितै दुख चितै भयो अति । तितै बिलाप कियो निरमल मति ६८५ ॥

दो० गये राम पैं निपटिकै निरखि तबै सब नेहु ।
अज्ञा दीनी लषण कों राज विभीषण देहु ६८६ ॥
विधिवतकपि निशिचरण सह दियो राजतबजाइ ।
बहुरिराम ढिगभेटलै आयो निशिचर राइ ६८७ ॥

छप्पय ॥

कहेउ राम अवतात वेगि लावहु वैदेही । सुचि अस-नान कराइ चहत मैं देखन तेही ॥ सुनि हनुमत सहजाइ चरण परि आयसु बरनी । पति आज्ञा सिर धारि चली भूषित प्रभु घरनी ॥ शिविका सवारसंग सुभट बहु लखि कपिगण देखन चले । जबबेत पानिन आड़त भए फिरमरे मन तें भले ६८८ ॥

से० सो सुनि कै रघुनाथ कही उतारहु यानसों ।
लखैंसकल कपिसाथ सुनितिमि आईजानकी ६८९॥

चौपाई ॥

लखि कटु बचन कहे रघुराई । सीता बेलि सरिस मुर-झाई ॥ तब रचि चिता राम मत पाई । लछिमण कहा प्रवेशहु माई ६९० ॥

दो० जो मम मन क्रम बचन सों दृढ़ राघव विश्वास ।
तौयहपावक सीतमोहिलखहिं जगतजन पास ६९१
इमि कहि प्रविशी जानकी लखत देव मुनि कोश॥
आप अनलकहि शिखि दईलेहुमनुज कुलईश ६९२ ॥

चौपाई॥

सिय प्रविशत भयो हाहा कार। कहा करत रघुवंश कुमार॥ तेहिक्षण काढ़ी सियहि दुतिबढ़ी। कानक अगिनि में तिमि छबिबढ़ी ६९३॥ तब रघुबर सिय पास बिराजे। निरखि शोक भगतनके भाजे॥ विधिहर सुरन सहित तेहि काल। लागे अस्तुति करन रसाल ६९४॥

मालिनी छन्द॥

दशमुख मदहारी। भूमि कन्या विहारी॥ निशित विशिख धारी। निर्जरा नन्दकारी॥ अमल कमल हारी। दण्डकारण्य चारी॥ जयति कलुष हारी। शंचु सन्ताप कारी ६९५॥ निखिल भुवन भर्त्ता। विश्व कल्याणकर्त्ता॥ खल कुलमद हर्त्ता। चण्ड कोदण्ड धर्त्ता॥ बनगत बन माली। कुण्डली वीर्य्य शाली॥ जयति विजय शाली। लोक रूपाब्ज पाली ६९६॥ मनुज पति कुमार:। काश्यपीजाङ्ग हार:॥ कुश पवन कुठार:। पन्नगा राति चार:॥ हिरद वर विहार:। केश वो निर्विकार:॥ सजयति जन तार:। शार्ङ्गधन्वा वतार: ६९७॥ विशद गुण विधाता। धैर्य्य श्रृङ्गीर धाता॥ सकल भुवन पाता। सज्जना नन्द धाता॥ सुजन घन मयूर:। पार्थिवी प्रेमपूर:॥ सजयति रण शूर:। पातक ध्वान्त सूर: ६९८॥ अधरत परितापी। पुण्यरूप प्रतापी॥ शर धर बरचापी। सुन्दरा लापलापी॥ अभयद बरदानी। पुण्यकी देवयानी॥ जयति जय दमानी। सूरशौर्य्याभिमानी ६९९॥ अखिल विबुध शिष्ट:। वाग्भवानी श्रृदिष्ट:॥ सकल गुण विशिष्ट:। शुद्ध सत्कार्यनिष्ट:॥ सुखद विमल कर्मा। शोभ नक्षत्र धर्मा॥ जयति कनक वर्मा। चारु खड्गीसुचर्मा ७००॥ भट रस शिखिवेदी। श्रीपति:शाल भेदी॥ दनुज तिलक खेदी। संगरी चाप वेदी॥ अजमनुज विचित्र:। पुण्यपूर: पवित्र:॥ सजयति सुचरित्र:। केशव: कौशमित्र: ७०१॥ अभिनग दभिराम:। दण्डका राम राम:॥ समर दनुजवास:। शौर्य संग्रामकाम:॥

तनरुचि जितकामः। शुद्ध सौंदर्य धामः॥ सजयति हरि रामः। सिंधुजा पूर्ण कामः १०२॥

अनुष्टुप्॥

रामाष्टकमिदंपुण्यं यःपठेत्भुविमानवः।
कदापिनस्पृशे क्षीकांत देवं भवदानव. १०३॥

दो० इमि देवन अस्तुति करी मुदित भये रघुनाथ।
तहंदशरथ आवतभये रामनवायोमाथ १०४॥

चौपाई॥

मुदित अशीस दियो नरनायक। कहत पुत्र उपजे सुख दायक॥ बहु अशीस लक्ष्मण कहं दीनी। परम प्रीति सीता पर कीनी १०५॥ चिरजीवहु मम वंश उजागर। अति सुख सुरन दियो सुख सागर। जाहु अवध सुत राजहि करहू। अति आनन्द जननी उर भरहू १०६॥ राम कह्यौ पितु सत चित साधु। छमहु संमात भरत अपराधु॥ एवमस्तु तब दशरथ कह्यौ। सुत सुख लखि नृप अति सुख लह्यौ १०७॥

दो० सबकपि बनि निशिचरण सौं राम लषणसौं ताहि।
बंदित पद दशरथ गये शक्र लोक के माहि १०८॥
तब प्रभु आज्ञा पाइकै बर्ष्यौ सुधासुरेश।
तातें जीये भालु कपि जौन मरे रण देश १०९॥

चौपाई॥

पुष्पक यान बिभीषण लाये। प्रभु प्रेरित मणि धन बरषाये॥ तेहि धरि धरि तन छोड़े कीश। जय रघुबीर कोशला धीश ११०॥ तब प्रभु सबन सहित तेहि बार। पुष्पक ऊपर भये सवार। चले अवध मग सियहि दिखावत। किषकिंधा पहुंचे मनभावत १११॥ तहंकपि तियन चढ़ाइ बिमान। पहुंचे अवध निकट भगवान॥ कियो प्रणामपुरहिनरईश। उठिउठिलगेबिलोकनकीश ११२॥

दो० भरद्वाज पैं जाइकै बैठे शीस नवाइ।
कथाकही रघुराइसों आपहि सब मुनिराइ ११३॥

तब पठयो हनुमान कहं भरतपास ससुभाइ।
मिलिनिषाद सों खबरि कहि पहुंचे तिन पहं आइ ११४॥

चौपाई॥

सुनिसो बचन भरत उठि आतुर। अंकलाइ लीनो कपि चातुर॥ बढ़ेउ प्रेमसो बरणि न जाई। आये अवध रामरघुराई ११५॥ सुनिशत्रुघ्न बहुत हरषाई। खबरि जाइ रनिवास जनाई॥ पुरजन गुरु समेत तेहि काल। चले भरत उर हरष बिशाल ११६॥ उततें आवत लख्यो बिमान। परेबंधु दोउ दण्ड समान॥ तबहिं उतारि जान रघुराई। प्रमुदित भरत लिये उरलाई ११७॥

हरिगीती॥

उरलाइ प्रमुदित भरत लिय तहं कहत सो छबि नहिं बनै। लखि एक सम युग बंधुको रघुनाथ यह संशय जनै॥ गुरु चरण पर शिर नाइ अंक लगाइ पुनि रिपुदौनकों। पुनि बंदि मातन मिलि नगर जन चले रघुवर भौनकों॥ ११८॥ सियरूप लखिलखि कौशला दोउभरे लोचन बारिसों। पहिले दुःखी शुनि मिले प्रभु तित भरत की महतारि सों॥ पूछत कहत सगरी कथा पुर राम पहुंचे आइकै। सब नारि नर दुःख हरे क्षण महं दृग सुधा बरषाइकै ११९॥ सुग्रीव आदि कपीनकी निजमुख बड़ाई बहु करी। उठि भरत लाये अंक लंक प्रधान के सहतापरी॥ गुरुदेव आयसु पाइ भरत समेत प्रभु तहं न्हाइकै। बैठे सिंहासन जाइ सुन्दर बसन अंग धराइकै १२०॥ रघुबीर सिंहासन लसे सिय सहित लखि जग दुखगयो। घनबिज्जु सम आसीन लखि सिर तिलक बिधि सुतनै दयो॥ कर छत्र लीने भरत लछ्मण बिजन अनुज सुचामरै। सुग्रीव सुरकुल रच्छपति सुरज सुखी शोभित करै १२१॥ तेहि काल नभ महि एक लागति जान और मकान सों। बहुरंग सुमन बरषानसों दुंदुभिन सों कल गान सों॥ तिहुंलोक जय जय कारराजे आज रघुपति राजपैं। सुर-

यक्ष किन्नर करहिं अस्तुति मुदित प्रभुहत काजपैं १२२ ॥ यह रामराज चरित्र परम पवित्र जे जनगावहीं ॥ रघुबर प्रभाउ सचाउ तें हरि भक्ति अविचल पावहीं । दश कंध विक्रम अंध वधरण घोरको रघुबर विजै ॥ सुमिरत विजय जग करत हरि दुखतें छुड़ावत जननिजै १२३ ॥

दो० कुंभजादि मुनि वृन्द सब आये रघुबर पास ।
बैठारे प्रभु बंदिपद पूजे सहित हुलास १२४ ॥

चरण दोहा ॥

ते तबकरि घननाद प्रशंसा कहीकथासबतासु ॥ रावण जनम विजय सबताको पुनिकपि कुल इतिहासु ॥ १२५ ॥

सो० धन्य धन्य रघुनन्द मेट्यौ संकट विश्वको ।
इमिकहि सहित अनंदगये विदाह्वै धामसब १२६ ॥
लषणहिं दिय युवराज रामचन्द्र रघुवंशमणि ।
लगीकरन सोकाज भरत सदा सेवत चरण १२७ ॥

चौपाई ॥

बहुदिन कपिन राखि रघुराई । पूजि सबन की करी बिदाई ॥ यदपि प्रेमवश जान न चहे । तदपिगये ते रघुबर कहे १२८ ॥ कंठलाइ सुग्रीव विभीषण । कहेउ मोहि सुमिरेहु सबहीक्षण ॥ तेपदबंदि हृदय धरिध्यान । चलेतजत दृग आंसु महान १२९ ॥ अंगद कहं बहुविधि समुझायो । पुनि सबनिज सिंगार पहिरायो ॥ बिदाकियो करि बहु सनमानहिं । इहि विधि कंठलाइ हनुमानहिं १३० ॥ तिनहिं विदाकरि आनंदछाए । राजेराज रामसन भाए । चले हुकुमसहं तीनहुं भाई । बढ़ी प्रीति दिन दिन अधि-काई १३१ ॥ कियो विहार बिबिध रघुराई । सब ऋतुचर आनंद बढ़ाई ॥ सीतापति रस सरस विनीता । सेवति सासुन परमपुनीता १३२ ॥ वर अशोकवनिका सुखपूरी । सकल कालफल फूलन रूरी ॥ को कहिसकै चरित रघुबर के । नरवपु विष्णु नलज अरि धरके १३३ ॥ धस्यौ मनुज वपु भगतन काज । लीलाकरत सुखद सहसाज ॥ गाइगाइ

हरि चरित उदार । नरकलि सहज होत भवपार १३४ ॥

दो० एक समय रघुवर सुनी कही सभा महं चार ।
कहहिं मनुजपर घर रही रामलई पुनिदार १३५ ॥

गाहा ॥

जदपि आप परिपूरन सदा सबहि निरदोष । तदपि सीयत्यागनचहै लोकवाद जनिरोष १३६ ॥

चौपाई ॥

अनुजन बोलिकहे उत्तान्त । तेवरजेवऊसुमति महान्त ॥ पै नरनाह करन हित नाऊ । लषणहिं कह्यो संग तुम जाऊ ३३१ ॥ रह्यो जानिकिहि गरभा धान । का चाहऊ पूछेउभगवान । सीताकह्यौमुनिन्हहमकह्यौ । तिनहिंवसन धन दीवे चह्यौ १३८ ॥ एवमस्तु कहिरथ बैठाई । बिदा कियो संगदै निजभाई । लछ्मण गंगपार जब आए । सिय सुखदेखि अवनि मुरछाए १३९ ॥

दो० लखिसीता पूछै कहा कहा सबै उत्तान्त ।
छिनलतासोमहिगिरी हायतजोमोहिंकान्त १४० ॥
इत सीता उत लषण दोउ रहेअतिहि बिलखाइ ।
पियआयसुसियसिरधरी लषणफिरेपछंचाइ १४१ ॥

सो० बालमीकि अस्थान रही सिया मुनि के कहे ।
उर रघुवरकोध्यान उदासीन मुनि बेषधरि १४२ ॥

रोला छन्द ॥

इहां रघुवरसभामैं फिरियाद आयोश्वान । कह्यौ तेहि द्विज हनो मोहिं अपराध बिन भगवान ॥ ता द्विजहि कुल पति कियो ताके कहे रघुनाथ । गयो सो गण बैठि तिलक कढ़ाइ अपने माथ १४३ एक गीध उलूक इक आये बऊरि फिरियाद । कियो तिनको न्याव पुनि सब हरण बिस्व विषाद ॥ धाम दीन उलूक को अरु गीध कों गति दीन । करत इमि प्रभु राज नित प्रति धीर धरम धुरीन १४४ ॥

दो० एक समय रघुवर सभा च्यवन आदि मुनि नाह ।
आये तिनहिं निहारिहरि बैठारे सहंचाह १४५ ॥

चौपाई॥

तिन सब कथा लवणकी कही। नाथ चहिय तेहि मारण सही॥ एवमस्तु कहि तिनसों राम। पठयो शत्रु दमन जयकाम १४६॥ मथुरापुरको दैकै राज। दीनो सैन मनुज सिरताज॥ चरण बन्दिकै चले सुहाये। बाल्मीकके आश्रम आये १४७॥

दो० करि प्रणाम बरणी कुशल रहे राति मुनि धाम।
ता दिन सीतहि सुत भये मुनि कुशलव कियनाम १४८॥

चौपाई॥

मधुपुर पहुंचे मधु सुत मारण। गये लवण पैं करि धनु धारण॥ हरको दियो शूल घर ताके। रह्यो बधे बहु सुर बल जाके १४९॥ गयो रहो सो करन सिकार। ठाढ़े रहे आपु ता द्वार॥ आवत देखि भयंकर रूप। शरतनि प्राण हर्यो नरभूप १५०॥ जयजयकार करहिं सुर वृन्द। मुनि आशीष देहिं सानन्द॥ तब अरि दवन बसाई पुरी। नाना बरण गृहावलि जुरी १५१॥ चार बरण निवसहिं छबि छाये। द्वृमि पुरथापि राम ढिग आये॥ बरणीकथा भूप पद बंदि। पुनि पठयो पुर राम आनन्दि १५२॥

दो० एक समय इक बिप्र सुत मर्यो धर्यो नृप द्वारि।
रामजिवायो ताहितब तपतशूद्र तेहिमारि १५३॥

चरणा दोहा॥

भरतमारि गन्धर्वकरोरन लियो तहांको राज। लषण मल्ल बधि जीत्यो सो थल पुर बिरच्यो सहसाज १५४॥

चौपाई॥

द्वै द्वै सुत निज राजबसाई। रहे राम पहं तीनहुंभाई॥ अश्वमेध की करी तयारी। बिरच्यो थान परम रुचि कारी १५५॥ कनक मई जानकी बनाई। बैठे यज्ञ करन रघुराई॥ गुरु वशिष्ठ आचारज भाये। गौतम कुंभजादि मुनि आये १५६॥ सह सुग्रीव सकल कपि वृन्द। आये यज्ञ लखन सानन्द॥ सदल अवध आयेलंकेश। सब देशनके मुख्य

नरेश १५७ ॥ बढ़ोयज्ञ छबि बरणि न जाई। अश्वहि त्याग कियो रघुराई ॥ श्याम करणनामक हयसोई। तहां जाइ जहं इच्छा होई १५८ ॥
दो० जो क्षत्री पन चहै सो गहै तुरंगहि साथ।
रामचन्द्र हय मखकरत पत्र लिख्योहय माथ १५९ ॥
संग दियो शत्रुघ्न को लिये अमित चतुरंग।
बाल्मीक आश्रमगयो दूमिमहि फिरततुरंग १६० ॥
बालक मैं खेलत रहे लव मुनि बेषहि साजि।
देखि पत्र सो बांचिकै बांध्यो पितुको बाजि १६१ ॥
चौपाई ॥
बाजि बंध्यौ लखि धाई सैन। त्यागु त्यागु यह बोलति बैन ॥ लखि टंकारि धनुष रण नव मैं। करी बिमुख इक लव इक लव मैं १६२ ॥
भुजंग छन्द ॥
कटे कोटि हाथी गिरे एक साथी घने बीर बाजी परे भूमि माहीं। घने छत्र टूटे लसैं केतु भारे कटे यान नाना बिराजैं तहांहीं ॥ गये बाल के सौंह जे वीर्य शाली गये कालके सौंह ते तत्र हाली। भगे जोहि योधा लवै बूझिकै चित्त है भेष धारे महा भुण्ड माली १६३ ॥
दो० तब सकोप शत्रुघ्न भट फेरि सैन शिशु हेरि।
कहतमहतरिस गहिगुणो बैनहिंनैनतरेरि १६४ ॥
मनहंस छन्द ॥
शठतू अबै यमलोक चाहतजानहै। मुनिपुत्र ह्वै किहि सों लह्यो धनुवाणहै ॥ परसन्न मैं लखिढाठ तापुर खारथै। तजु अश्वको अबहूं सुजा घरकीपथै १६५ ॥ लवनै कहो सत बात बोलतसूरसी। रिपु दौनजूरिपु दौनताकितहै बसी ॥ भय त्यागि साजहु युद्धक्षत्रिय ख्यातहौ। बधि सौन दानव फूलि अंगन मातहौ १६६ ॥
दो० इमि कहि धनु टंकारिकै तजे बज्र से बान।
तेकाटे निज शरणसों लक्ष्मण अनुज सुजान १६७ ॥

चौपाई ॥

लरे लरांक चलांक चतुर भट । दुहुंदिशि दुसह करैं शरके ठट ॥ तहं अरि दमन दुरद सम योधा । करि बर लाघव धरि उर क्रोधा १६८ ॥ लवपैं छायदिये बहुबाणा । बिष शरसे शिष धरे महान ॥ तेहि लव निज शरसों द्रुतकाटि । दिये विशिख परदर पर पाटि १६९ ॥ तब अरिघ्न लोचन करि लाल । मास्यौ भल्लदण्ड मनुकाल ॥ तेहि लव काटेउ बीचहि जोर । सो लखि चकित नरेश किशोर १७० ॥

दो० तब निज शरसों हयन सह सुतहि करि गतप्राण ।
भेदेउ तन अरिदमनको गरजि महाबलवाण १७१ ॥

सो० व्याकुल ह्वै अरि दौन लौन बधनको शर लियो ।
लवउर प्रबिश्यौतौन गिस्यौ मौनह्वैभूमिभट १७२ ॥

चौपाई ॥

हयहिछोरि छोरहि उठवाई । चलेशत्रुहन शंखबजाई ॥ लव लैशात और शिशुभागे । जाइकहेउ सीताके आगे १७३ ॥ कोउ नृपको बांध्यो लवबाजी । सो बधिताहि जातलै राजी ॥ सुनि सियमहा शोच मैं भरी । कहति कौन यह साहस करी १७४ ॥ रामचन्द्र सुतकौं बधिडारो । रे बालक सब कुशहि पुचारो ॥ तेहिक्षण कुशकानन में रहे । आयेसुनत चाप करगहे १७५ ॥ जननि कहेउ तब लवको मरण । हय मोचन नृप साहस करण ॥ सुनतहि कोपि चले कुश कैसे । बारन देखि केशरी जैसे १७६ ॥

दो० फिरीजाति देखी सयन फेरी द्रुत ललकारि ।
भिरेजाइ अरिदौनसों सन्मुख बिबिधप्रचारि १७७ ॥

भुजंगप्रयात ॥

लगो होन भारी महा युद्ध तच्चै । दुहूं ने भस्यौ व्योप लौं दीहपच्चै ॥ कटे शीश केते पटे भूमि माहीं । परे बाजि हाथी तनै प्राण नाहीं १७८ ॥ कुशै देखि भागैं भले वीर कैसे । लखे विष्णु भक्तै महा पाप जैसे ॥ कई कोटि सारे परे शोधमासी । लयौ खेत जैसे लसै भू बिलासी १७९ ॥

असे कालकी रूपसे रामजायो। लसौ तायले चाप सों कोप छायो॥ सुमित्रा सुतै यानसों हीन कीनो। चहुं ओर में शायकै छाय दीनो १८०॥

दो० धीर धारि अरि दीन तब पैदर धनु टंकारि।
कुश गजको अंकुश सरिस मारे शायकचारि १८१॥
तातें बेधित शायकै करि निज नैनन लाल।
गरजिवचनबोलतभयो कुशरण बिकट बिशाल १८२॥

चरण दोहा॥

शत्रुदमन तू शत्रुदमनकिय झूठानामउदोत। तोसो शत्रु दमनकरि अबहौं शत्रुदमन सतहोत १८३॥

चौपाई॥

मार्योबाण बजसमशत्रासु। गिरेधरणि अरिदमनगतासु॥ भागि गई सैना सो देखि। तब कुश तहं निज अनुज परेखि १८४॥ काढ्यो शर उरतें बलसिंधु। उठिकै मिलो कुशहि लवबंधु॥ बांधि बाजि कहं सियपैं जाई। कही कथा सब शोभनवाई १८५॥

बरवै॥

खबर सुनी रघुनायक मख आसीन। अतिहिशोचि करि बोले परम प्रबीन १८६॥

सवैया॥

सुलक्षण लक्ष्मण बीर बधे रण लक्षण रक्षण बीशर लक्ष विचक्षण भूमिप ऐसो कोऊजो हतै मम बंधुहि युद्ध समक्ष॥ बध्योअरि दीनहिं ह्वै सुनि पुत्र अहै वहकौन सहाबलदक्ष। अलक्षकिधौं युगयक्ष प्रतक्ष किरक्षहिरक्षण रावणपक्ष१८७॥

दो० जाऊ लषण बांधऊ तिन्हैं जियत लाइयो पासु।
देखऊं तो कैसे अहैं सुनि सुतगतरण आसु १८८॥

नरेश छन्द॥

सुनि बीर चले पदबन्दिकै। करले शर चाप अनन्दिकै॥ संग सोहति सैनसोहावनी। परबीरन धीर बहावनी १८९॥ तहं जाइ लख्योअरि दीन कों। महि सोहत ले ब्रत मीन

को ॥ कुञलौ तहं चाप टंकारिकै। भये मोहत जै मति धारिकै १९० ॥ सुनिके सम बेषअनूप हैं। अनुरामहिंके युग रूपहैं ॥ तबराघवने हंसि योंकह्यो। द्विज छचिन पूजित हौ सह्यो १९१ ॥ सुनि बालछमा हमनेकरी। हय छोरि फिरौ घर या घरी ॥ तब बोलेउ राम कुमार यों। तुम त्यागत आपुन धर्म क्यों १९२ ॥ हय जोति पुरावहु यज्ञकों। सुख देहु महा परतज्ञकों ॥ सुनि सो फनि संगर धूत सों। भए भाषत राघव पूतसों १९३ ॥

चौपाई ॥

क्यों सुनि नन्दन टेक निबाहत। मो भुज सागर बूड़न चाहत। क्यों जननी जनकै दुख दायक। होत इथाउर लै मम सायक १९४ ॥ ना हम रावणके सुतलछण। जोगुणि चित्त चहौ बलभछण ॥ जा यत बंधुगयो लरिकै ध्रुव। नात घरी इक मैं तुम ताभुव १९५ ॥ जौं कछु साहस तौ शर त्यागहु। ना तब त्यागि अबै हय भागहु ॥ बोलत सोचि भये अहिके पिय। बाल कथा सुनि रोशन मोजिय १९६ ॥ पूछि पितामन आवहुलै धनु। मो संग आजु करो तवहीं रनु ॥ मो कहं कोउ अधीन कहै जिमि। भूपति ह्वै सुनि बाल बधै किमि १९७ ॥

सारंग छन्द ॥

बोले तबै राम छोरे यहो बैन। छचोपनो भूलि आये कहा ऐन ॥ लै चापकों शत्रु हेरो खरो युद्ध। तासों लरो ना कहो चित्तकों शुद्ध १९८ ॥ ना त्यागिहौं बाजिकोंबिन्तु संग्राम। कैसे करैंगे कहो यज्ञकों राम ॥ भ्राता निहारे तिहारे नहींदुःख। नाहींलरो जोहिजा बीरसन्मुख१९९॥ यों बोलिकै कान लौं चाप। त्यागे घनेबाण लागैं लखिसांप ॥ तासों कई बीर भूमैं गिरेआइ। केते कटे हाथ माथे घने पाइ ८०० ॥ सो देखिकै राम भ्राता महा कोपि। कोदण्ड कों सज्ज कीनो हिये चोपि ॥ तातें तजे दोह नाराच कों छांटि। दीने सबै शत्रु के पत्रकों काटि ८०१ ॥

सारंगी छन्द ॥

हाथी घोराबैठे योधा नाना बाणै त्यागेहैं। तेलौ औलौके भाई के देखैं जाके लागेहैं ॥ राजाकी सो सैना भारीचारों आसा सों धाई। राकाराजैं कोपैकों ज्यों मेघौंकी औली आई ८०२ ॥ सूलै हूलैं भल्लै मारैं नाराचै डारैं कोपे। मारो मारो बोलैं बाणोते योधा युद्धैचोपे ॥ सो औलोकी सैना ते दोऊ भाई कोपे डांटी। त्यागे पत्रीसो ने लौमें मर्म्मोंकी औली काटी ८०३ ॥

दो० काटि परन के शरणकों राम सुवन रणचंड।
खंडकियो पुनिलक्षण को सुरथ सहितकोदंड ८०४ ॥

चौपाई ॥

पुनि शरपांच तजे रिसिछाई। तेपविसे प्रविशे तनजाई ॥ तिनतें बेधित ह्वै छणएक। रहिअचेत पुनिउठे सटेक८०५ ॥ जोरि जोरि शरधनुहिं ततक्षण। मारण लगे कुमारन लक्षण ॥ तिनहिं मगहि काटत ते कैसे। श्रुतिके बचन नासतिक जैसे ८०६ ॥ जेजे शर मारत पन धरिधरि। ताहि मगहि डारत द्वै करिकरि ॥ विरथ होहिं लक्ष्मण के बान। काल निकट जिमि औषधि दान ८०७ ॥ जेशर अक्र जितहि रणमारे। ते सब दोउबंधुन पैंडारे ॥ निष्फल भए रामसुत मास। जिमिमन शुद्धबिना उपवास ८०८ ॥ तबलव कुशके शरकोमारो। फिरी सैन रघुबर की भारी ॥ ताहिं फेरि लक्ष्मण रणधीर। बरपेबिज्जु सरिस सबतीर ८०९ ॥ तेशर भेदि भेदि शिशुगात। रुधिरमढ़े अधकढ़े लखात ॥ मनु सिंगार रसके तनकढ़े। रौद्र आंकुरे अगणित बढ़े ८१० ॥ इमि वाना कुल करि दोउ बन्धु। गरजे राम अनुज बल सिंधु ॥ तब सरोस कुश चाप टंकारि। विशिख बीस मारे ललकारि ८११ ॥

वीरछन्द ॥

सहिताहि। रणमाहिं ॥ लक्ष्मिमन्न। प्रसन्न ८१२ ॥ मतिऐन। हंसिबैन ॥ वरयत्त। रणरत्त ८१३ ॥

पांचालछन्द ॥

हेबीर। होधीर ॥ संग्राम। के काम ८१४ ॥

चमाछन्द ॥

तुमपर हमराजी। अबहूं तजहू बाजी ॥ सुखयुत चित ह्वैकै। निवसहु भयख्वैकै ८१५ ॥ मखहिं चलहुदोऊ। अरचहिं हम सोऊ॥सुनिसुत यतिनीके। अहहु सुभटजीके८१६॥

कुमारललित छन्द ॥

कुमार यह बोले। भलो कहत होले॥ नहीं वचनऐसे। बली कहहिं जैसे ८१७ ॥ बड़ो प्रबल ताई। अहै नृपति भाई॥ लरै समर माहीं। मिले तुरग नाहीं॥ सुमो लषण जावो। नृपै अवहिं लावो॥ लरैं समर आगै। करैं तबहिं जागै ८१८ ॥

कमलछन्द ॥

लरन ललनारहो। तुरग मख क्यों चाहो ॥ प्रथम यह सोचते। तबहिं कछु रोचते ८२० ॥ लरन मखमो चहो। हमहिं जय कै लहो॥ ललन फिर भौनही। रहहु तुम मौनही ८२१ ॥ लषण सुनि बात कों। सरिसि करि गात कों॥ धनुष धरि जोरसों। तजत शर तोर सों ८२२ ॥ पितु अनुज बाणहीं। क्रोध लव न मानहीं॥ मगहि मह काटते। गरजि पुनि डांटते ८२३ ॥ इमिलरहिं वेगसों। शर धसनि तेगसों ॥ कोउ भटन डारते। बिजय बिधि धारते ८२४ ॥ अपर बर बाणसों। कुलिशयुत सानसों॥ तबहिं पलटो घनो। लषण दल भै सनो ८२५ ॥

दो० पुनि लक्ष्मण फेरयो दलहि सो लखि रामकुमार।
बधे तुरग गज भटन तहं ताक्षण कैकहजार ८२६ ॥

चौपाई ॥

सूखे बिपिन अगिनि जिमि बसैं। तिमि हरि दल महं हरि सुतलसैं ॥ काटिकाटि सुभटन के कुण्ड। भरी धरणि सब कर पग मुण्ड ८२७ ॥ लखत अखण्ड धनुष दोउ केरे। सडर जात कोउ बीरन नेरे ॥ इमि करि समरभूमि तेहि

काम । चहुंदिशि भरि सुरदनको माल ८२८ ॥ कुलिशअस्त्र जोरि धनु मध्य । हन्यो लषण उरजानि अवध्य । तातें गिरे धरणि धर धरणी । विरथविधतु बेध्यो तन शरणी ८२९ ॥ लषण निधन जब रघुवर सुने । व्याकुलह्वै पुनि पुनि शिर-धुने ॥ कारण मनुज दनुज बनदहन । निरखि भरत दिशि लागे कहन ८३० ॥ तातजाहु तुम संगर काज । जहां मरे बहु सुभटसमाज ॥ लावहु बांधि उभय सुनिवारे । सानुज लषण निपातन हारे ८३१ ॥

दो० अहोकाल विपरीतता मोसों कहीनजाय ।
इन्द्रजीतशिरहरणतेहिलघु शिशुदियोगिराय ८३२ ॥

हंसछन्द ॥

हैं वह कोऊ । दानव दोऊ ॥ ह्वै सुनिवारे । मोहहिं मारे ८३३ ॥ ब्राह्मणमाहीं । ऐगुण नाहीं ॥ विप्रसदाहीं । मोहितआहीं ८३४ ॥ रावणकेरे । हैंवहचेरे ॥ कौकोउदूजे । दैतन पूजे ८३५ ॥ तात सिधारौ । अघु निहारौ ॥ कौभट बांधौ । कैबध साधौ ८३६ ॥ को बिनदानौ । हैमलसानौ ॥ जोममभाते । युद्धनिपाते ८३७ ॥

दो० सुनत भरत पदवंदि दोउ निरख्य थसु धरिलीन ।
सुरथबैठिकर धनुअधरि गवन तवनथलकीन ८३८ ॥

बसुकणाछन्द ॥

संगदिये राम । भटवीर्य धाम ॥ तेचले साथ । धरिशस्त्र हाथ ८३९ ॥ लंकेशवीर । सुग्रीवधीर ॥ अंगदउदार । केशरि कुमार ८४० ॥ एभरत संग । घोडे सुढंग ॥ जयरामचन्द बोलहिं अमन्द ८४१ ॥

बरवै ॥

बनचर निशिचर नर को भारी भीर । लए भरत उत पहुंचे संगरतीर ८४२ ॥

लीलाछन्द ॥

सोदल आयोजबै । शिशुकंपायोतबै ॥ लोकडरायेभये । काभरि ह्वैहै मये ८४३ ॥ लौ कुश आये तहां । सैन पिता

की जहां ॥ है बनु हायैधरो । शब्दित बिछैकारो ८४४ ॥ ते दोउ योधा लसे । बीरनकेही बसे ॥ मानहुं शोभा मयी । हैं बपु रामै भयी ८४५ ॥ सुन्दर देखे जवै । आचरजे ते सबै ॥ को यह शोभा सने । राघव से हैं बने ८४६ ॥ बाण करै लै लसे । कम्मर भाथा कसे ॥ चाप सुहायो अहै । धीरज देखे बहै ॥ ८४७ ॥

हंसमाला छन्द ॥

तन है श्याम रूरे । रण आनन्द पूरे ॥ सुनि सिंगार सोहे । लखिकै काम मोहे ८४८ ॥ कुशलौ एक हीसे । सब कों तत्र दीसे ॥ लखिते सोचि जीमैं । कहते आपु हीमैं ॥ ८४९ ॥ यहतौ राम आपै । प्रगटावैं प्रतापै ॥ सबको गर्ब पीसैं । लरिका होय दीसैं ८५० ॥

दो० इमिते वरणहिं परस्पर तब निज रथहि बढ़ाइ ।
भरत भतीजन सों भये कहत महत मतिनाइ ८५१

चौपाई ॥

सुनि सुत प्रथम प्रणामहिं लीजै । दैअशीष नृपवाजिहि दीजै ॥ बहुरि निमंचन सब को चारु । कहिय धरम गुनि धंगी कारु ८५२ ॥ द्विज क्षत्रिनके पूज्य सदाई । हमसों तुम सों कहा लराई ॥ सुनि बोले सीता सुत बैन । परदल जैन बुद्धि के ऐन ८५३ ॥ कहा भरत तुम ऐसे कहत । क्षत्रीहोय लाजनहिं गहत ॥ नहिं बाजी इमि मिलिहै तोही । मानहु हारि कि जीतहु मोही ८५४ ॥ सानुज रामबली जोऐसे । अश्वमेध आरंभ्यो कैसे ॥ येतुव बन्धु धरणि युग लोटे । सुने नाम बड़ दरशन छोटे ८५५ ॥

कवित्त ॥

आयो एक प्रथम सुनत शत्रु सूदन सों शत्रुही सों सूंघो पस्यो मध्य सुरदन है । फूल्यो अति मन अरिदमन विचार सोई भये सौंह अरिदमनहीं रह्यो तन है ॥ गिरधरदास इन मास्यौ सुन्यो लवणहिं लवहिं लागो प्राण भागो लव रण है । लोग कहैं लौन दरहोंहुं लौन दरपरि युद्ध

पानीमें मिलायो ताहि छण है ८५६ ॥ लछण के लच्छण सुनाऊं नाहि कोऊ कहै अहैं ये अनन्त जाको अन्तकअहैं नहीं। कोऊकहै लखनपै मेरेजान आधहून कोऊ शेषमो अशेष प्राण लोग देखहीं ॥ गिरिधर दासकोऊ कहैचित धरचिति धरघरो जासुकृत धरसतिहीं यहो। सुनोकरि स्वच्छमन लोग कहैं लच्छमण पै यह हमारे जान एकहू रतीनहीं ८५७ ॥

दो० भरत तुम्हारो नामसो कहाभरत रहिधाम।
रणपर तनअर भरतनौ भरत सांच बलधाम८५८ ॥

चौपाई ॥

इमिकहि विशिष वज्र अनुहारि। बरसे युगलबन्धु धनु धारि ॥ तब सब जुटि मनुज कपिरच्छ। चलेघोरकरि ज-रण प्रतच्छ ८५९ ॥ गजासीनबहुसुभट प्रचण्ड। रथआसीन अमितवरिबंड ॥ कितेतुरग चढ़िचले चलाक। धरुधरु मारु मारु कहि वाक ८६० ॥ तेहिछण महासैन के तोरहिं। रोक्यो दोउबंधुन शर जोरहिं ॥ सबके आयुध काढि गिरा-वत। भरत बाणकहं महिमधि नावत८६१ ॥ काटत सुरथ तुरग गज पातिन। प्रगटकरी शोणित सरिता तिन। गिरहिं निशाचर वानर भरिभरि ॥ शैल सरिस रणगैल परिकरि ८६२ ॥ मनुजन के सिरकाटि गिरावत। करपद भिन्न भिन्न भुवनावत ॥ गजके शीस गिरहिं महि आई। श्रवत रुधिर कछु बरणि नजाई ८६३ ॥ मनु कज्जल गिरि ईंगुर धार। निसरति अमित सरित अनुहार ॥ विशिख भिन्न सिर मुक्ता दरसैं। शशि तम पटल फारि मनु-सरसैं ८६४ ॥

दो० मनुज सिरनशरलै उड़हिं दशदिशि इमिदरशाहिं।
मनु बहुराहुन सुरकरि इतउत नभलैजाहिं ८६५ ॥

वसंत तिलक ॥

डोलैं पिशाच रणमैं सुदपूरिकारे। नाचैंअनेक विधिसों कर मुण्डधारे ॥ पीवैंलहू भटन के बहु अंगखावैं। काली

लियेसहचरी चढ़िसिंहधावैं ८६६॥ संग्राम भूमिवऊ कंका शृगालडोलैं। आंतैं गहैं परसपैं सुद पूरि बोलैं॥ चारो दिशा रुधिर मांसहि दौठि आवै। जोकादरै परमभै उर उपजावै ८६७॥

दो० इमिदोउ भट शरवेगसों भगीसैन तेहिकाल।
सोलखि धनुधरि भरतने त्यागी शायकमाल ८६८॥

चौपाई॥

तबलव भरत लरत अनुमानि। मारेपांच विशिख धनु तानि॥ तेशिर भये लसे रणकैसे। रविकर कुवलय प्रविशत जैसे ८६९॥ इमिभरतहि वेधित लखिनील। गरजि चलो अति विक्रम शील॥ कपिसैनेश शिखर गहिभारो। लवके मस्तक उपर मारो॥ ८७०॥ ताहि शरनसों करिमग चूरन। लीनो भल्लहोइ रूषि पूरन॥ तासों भेद्योकपि बलवंतहि। तरुअमूल समगिरो तुरंगहि ८७१॥ लखिगजगवय तार नलआदि। चले समर महं घन समनादि॥ तबकुश विहसि गजहि शर मारो। परो मनऊं गजसिंह विदारो ८७२॥ तिमिकुश शरपैं शोणित भरो। चेत गंवाय गवय महिपरो॥ तार समरलव को शरपाइ। पस्योस्रतक कतार महंजाइ ८७३॥ तब नलसोंहंसि कुश इमि कहो। शिल्प करन पंडित तुमअहो॥ बांध्यो सेतुसिंधुको सादर। समवल सागरबांधऊ बांदर ८७४॥ इमिकहि हृदय ताहि शर मारो। उड़ि नभलौं गिरि परो विचारो॥ इमि सब कपिन देखि शरचूरन। चल्योगवाक्ष लिए लंगूरन ८७५॥ श्यामवरण अतिदीरघपुच्छ। सोदल लवनिरख्यो गुनितुच्छ॥ महा शिला लव ऊपर डारी। लव तेहि चूरि शरन भुवपारी ८७६॥ फैलो कीश पुच्छ रण सोहै। महाकाल की आंत मनोहै॥ तब शरसों गवाक्षके तनमें। किये गवाक्ष अनेक नरन में ८७७॥ बहुरि एक शरविनु फर मारो। सो उठाइ शतयोजन पारो॥ रण अंगन क्रीड़त दोउ बालक। इमिलखि दल्याकीश कुलपालक ८७८॥

दो० अरेविप्र सुतजात तू छिप्र अबै यमधाम।
इमिकहि महापहार लै डास्यो मारणकाम ८७९॥

चौपाई॥

तेहि लव जव क्षण सम करि डारो। बहुरि बिहसि इमि बचन उचारो॥ आवहु बनचर वालीबंधु। ऋष्यमूक आश्रित बलसिंधु ८८०॥ अवतारा प्रसन्न तुवनारी। उमाप्रसन्न बालि रुचिकारी॥ इतनीसुनत महाऋषिराई। चलो विटप धरिहरि कुलराई ८८१॥ तबलव बिन फरवाण निकारो। कोश ईश उर अंतर मारो॥ तातेंभिदो परोसो कैसे। बज्रहतो सुमेरु गिरि जैसे ८८२॥ लखिसुग्रीव पतन तेहिकाल। दौस्यो दृढ़ऋच्छ कुलपाल॥ हाथ गदाधुमाइ कहवात। सुनिशिशुअवनहिं जीवतजात ८८३॥ तब कुशकाटि गदा करहीमें। बोलेबचन दयाधरिहीमें॥ आवहु जामवंत बलवंत। करहुपराक्रम समर तुरंत ८८४

दो०॰ अंतऋच्छ तुवप्राणकों हों न पठावतऋच्छ।
परमइष्ट मनमें समुझि ताते फिरुजिव इच्छ ८८५॥

तोमर॥

कह जामवंत रिसाइ। द्रुतप्रत लोकहि जाइ॥ इमि भाषिरच्छ अनेक। लवपैं तजे गहि टेक ८८६॥ तब पाश काढ़ि तुरंत। भए बांधते कपि कंत॥ इमि जामवन्तहि देखि। पतिलंक को अतितेखि ८८७॥ धनुतानि कौ ललकारि। चलतोभयो रिसिधारि॥ अवलोकि सो बलऐन। कहते भए यह बैन ८८८॥

दो० आवहु लंकापति प्रबल जननी वंशसपूत।
निश्चिर कुलकी चीन्ह तुमपुण्यरूपमतिपूत ८८९॥

चौपाई॥

कहहु कुशल मन्दोदरि कीसब। रांडभई कि सुहागिनिहै अब॥ तुम जो नहिं रहते भट सिंधुर। तौनहि रहतो ता सिर सिंदुर ८९०॥ ब्याह समय मयने कर काको। गहवायो सत कहहु सुलाको॥ तुम दशमुखहि रहे पितु

जानत । निजमुख बार हजार बखानत ८९१ ॥ जबतें हरि परधामहिं गए । बंधु बधाइ भूमिपति भए ॥ तबसों रावण तियकों धरी । जो तुव जननि रहीसब घरी ८९२ ॥

कुण्डलिया ॥

जिहतुम सनुखौ जौनन्वप आसन बैठे सोय । तानृपकी सब बस्तु को स्वामी सुन्दर होय ॥ स्वामी सुन्दर होयराजधानीको तैसे । तिय कोहुपति होयकरै रस भोगहिंतैसे ॥ पितु आसन न्वप लहहिं जननिसों रमहिं न पापिछ । सो शठ कियौ कुकर्म महा सनुभात सुधर्म जिह ८९३ ॥

दो० इमि कहि चापटंकारि कै हन्यो एक शरवान ।
तासोंनैकुत पतिगिरो महिलहि थिरोअप्रान८९४ ॥

चौपाई ॥

सो लखि भरत तुरत गहिभल्ल । मास्यो लव उरमाहिं प्रबल्ल ॥ ताकेलगे महा दुखलह्यौ । इकलव लवभट मुर्च्छित रह्यौ ८९५ ॥सोलखि कुश दुशमन दिशिहेरि । मारे शायक नैन तरेरि ॥ तेशर काटि भरत भुवडारे । ताकि तीनपुनि शिरमधि मारे ८९६ ॥ तकि लव चारि बाण निज मारि । रथकेहय बधिदीनेडारि ॥ तबकुश द्वैशरतें हनिसूत । काट्यौ केतु महा मजबूत ८९७ ॥ अमर सुरथचढ़ि दशरथ सुवन । भरे शरनसों चौदहभुवन ॥ बाल्मीकि आश्रम चहुंओर । सुनियत संगर सारहि सोर ८९८ ॥ तब कुश तीन बाण हनिचण्ड । काट्यौ तुरत भरत कोदण्ड ॥ तबहिं भरतदूजो धनुधारि । मारे छब्बिस बाण प्रचारि ८९९ ॥ तिनहिं काटि लव पुनि धनुकाट्यौ ॥ केतुकाटि शर रथपर पाट्यौ । बहुरि भरत धनु आन उठायो । ताहि तुरत कुश काटि गिरायो ९०० ॥

दो० जौनजौन धनु भरत लिय तेहि तेहि काट्यौ आसु ।
बहुरि केतुकहंकाटिकै कियोसुरथ हयनासु ९०१ ॥

चौपाई ॥

भरत धनुष कुश काटत कैसे । रावण सिरहिं रमापति

जैसे ॥ बहुरि बज्र सम मारेउ बाण । सो उर भेदि गयो गति मान ९०३ ॥ सुरक्षित अरणिगिरे रघुबीर । गरजेउ कुम्भ प्रचण्ड रण धीर ॥ सो लखि अंगद बिटप उखारि । चलो चलाक कुम्भहि ललकारि ९०४ ॥ बरष्यो बिटप इन्द्र कपि कैसे । समर राम शर बरषत जैसे ॥ तेहि सब काटि काटि तिलतूल । कियो कोप कुम्भलव गतशूल९०५॥ अंगद तब उठाइ गिरि भारी । मास्यौ रण मुनि सुतन प्रचारी ॥ सो गिरि काटि गिरायो भूमि । लखि कपिपति अति बल रण झूमि ९०६ ॥ गरज्यो महा मेघ सम समर । सुनि भय सहित असुर नर अमर ॥ तेहि क्षण भरतपतन सुनि कान । बिकल यज्ञतें उठि भगवान ९०७ ॥ चढ़ि रथ आये आसुहि तब । बालमीक को आश्रम यब ॥ देखे शत्रु दमन महि परे । चेतबिहीन रुधिर सों भरे ९०८ ॥ आगे जाइ लषण कहं जोये । सब समरथ खोये महि सोये ॥ बहुरि भरत देखे रण माहीं । महि सोवत सुधि नेकहु नाहीं९०९। नलनीलादिगने कपिजौन ।मरि मरिपरेपहुमि तल तौन ॥ निशिचरपति अरु बनचरपति दोउ । परे मेरु नीलाचल से सोउ ९१० ॥

दो० जामवन्त बांधे लखे तब मैं तुच्छ समान ।
भरत लखे दोउ बंधुसंग अंगद अरु हनुमान ९११॥
कपि नर नैरित द्विरदहय मरे परे बहु घोर ।
महाप्रलय की तौरसो देखी संगर ठोर ९१२ ॥

सो० इमि तिन सबन निहारि धारि परम दुख दीनह्वै ।
माया मनुज खरारि लागेकरन बिलाप रण ९१३ ॥

बरवै ॥

हा हा भरत तुम काहेहु न मोहि । अबका करिहैं राजहिं तोहि इमि जोहि ९१४ ॥ परम सूर रण मारे बहु गन्धर्व । सो बल सुनि सुत सनमुख खोयो सर्ब ९१५ ॥ तुम मम नितपद सेवी सनचित सोउ । मोहि तजि अपर अराधन करेउ न कोउ ९१६ ॥ जनक बचन कहं त्यागेउ

सेवक धर्म। त्यागी जननिधरणि सब जो हितधर्म ९१७ ॥
अति प्रताप जग जाहिर बुद्धि निकेत। आशु उठत किन
मोहि लखि अवनि अचेत ९१८ ॥ हा लक्ष्मण मोहि तजि
किमि जूझेजंग। सहे अधिक दुखचलिकै बनमो संग ९१९ ॥
बनहुं जात तुम त्यागेउ नहिं मो साथ। अब कितगये
त्यागि मोहि कियो अनाथ ९२० ॥ जब तुम रणमहि मोये
शक्ति प्रहार। तब तित तुम्हैं जियायो पवनकुमार ९२१ ॥
अब को रण महि संगहि कछु नवसाय। हाय करमगति
ऐसीकैसी भई अन्याय ९२२ ॥ जिनजीत्यो सुरनायहि मार्यो
ताहि। लघु सुनि सुतन निपात्यौ तेहि रण चाहि ९२३ ॥
रावण दल रतनाकर ह्वै कै पार। सुनि सुत गोपद बूड़त
लगीनवार ९२४ ॥ हा रिपु दवन सवन ह्वै रहे सुमोहि।
परत शरण नहिं आतुर मोकहं जोहि ९२५ ॥ मारो
लवण महाबल एकहि बाण। लहि हित पुत्रन भूतलपरे
अप्राण ९२६ ॥ लक्ष्मण शत्रुघ्न भरत प्रिय मेरो प्राण।
परो सुमित्रा नन्दन कारन यान ९२७ ॥ मेरे बन्धु परम
बल सकल सुजान। नीति धरमधर सुन्दर बुद्धि निधान
९२८ ॥ दशरथ सम मोहि जानत रहे सदाहि। अबतिन
बिन मैं करिहौं काह गृह चाहि ९२९ ॥ धिकधिक जीवन
मेरो बंधु बिहीन। बिछुरे प्राणनअजहुं अति अघपीन ९३० ॥
मो सम और कौन जग जीवत ढीठ। मरत नहीं उर
बिहरत यह लखि डीठ ९३१ ॥ अब नहिं मो कौं जग मैं
है कछु काम। जहां अनुजतहं जैहैं तन तजि राम ९३२ ॥
कहा राज परयोजन मखसों काह। जौं मम बन्धुपरे रण
विगत उछाह ९३३ ॥ जौं भये प्राण भरतके तनसोंभिन्न।
दशरथ वंशभयो तौ आशु उछिन्न ९३४ ॥ काह करौंगो
मखकरि बानी पाइ। मरे परे धरणीमहं तीनहुं भाइ ९३५ ॥
धिकमोहि जानेउ कौशिल कुल जंजाल। लघुबंधुन को
देखत रण असहाल ९३६ ॥ मोसम अरु को पापी या
जग और। जनमत मार्यौ जनकहि चलि बनठौर ९३७ ॥

मेरेहित बहु लक्ष्मण सहे कलेश। रांड भई सब माता कुतसित भेष ९३८॥ भरत घरहिं बनचारी अधिकमलीन। सहे दुःख मेरे हित बहुदिन दीन ९३९॥ सीता अतिदुख पायो मेरे हेत। तजतजो छलकरिकै पाप निकेत ९४०॥ मेरे हितए कपिसब तजिगृहद्वार। मरेसमर महं व्याकुल करि परिवार ९४१॥ मेरेहित कपिनायक त्यागेउ प्रान। तारा उमा बिलपि हैं दुखित महान ९४२॥ लखहु बिभीषण की गतिभोये युद्ध। मेरे पाप प्रकट सब या थल शुद्ध ९४३॥ जबलौं रबिशशि तबलौं दीनोराज। कहांवचन सागबन्यो मेरो आज ९४४॥ जेते मरे परे महिमेरे पाप। कोमम सम है दूजो दायक ताप ९४५॥ आजनिरखि गति ऐसीया रणबीच। कढ़त न अजहुं करैगो का असुनीच ९४६॥ कोउ जग भयो न ऐसो विक्रम भौन। मम एकहु अनुजहि रण जीतैजौन ९४७॥ सोयह है मुनिवारे मारेगर्व॥ यह हरिहस्यौ हमारे बिक्रमगर्व ९४८॥ द्विजसंग बैरकिये को फल परतच्छ। आजमोहि है दरशत नाशन पच्छ ९४९॥ यह सीताकाढ़न को फलहै मोहि। जीत नहिंयो बिसीरण बंधुन जोहि ९५०॥ बिन अपराध सतीतिय काढ़इ जोइ। ताकी गति जगतीमहं ममसम होइ ९५१॥ अश्वमेध को करिबो कहं चितआउ। जामें भई दशा यह कर्म प्रभाउ ९५२॥ जहां भरत अरु लक्ष्मण तहंई राम। बंधु बिना मम भूतलहै कहकाम ९५३॥ कहा कौकई कहिहैं मो सुखजोहि। उठहुतात उरलावहुं यों गुनिमोहि ९५४॥ हैसुतवती सुमित्रा कहिहैं काह। कुलहर जननि कौशला नरिहै दाह ९५५॥

दो० राम आगवन जानिकै चरणगहे कपिदोय।
समुझायो बहुभांति तिनकहा करहुगे रोय ९५६॥

चौपाई॥

रामचन्द्र की आज्ञा पाई। दोउ कपि भिरे हेरि दोउ भाई॥ तब लव हनूमान कहं बांध्यो। मरकट सम भाट

कारज साध्यौ ६५७ अंगददेखि कहैकुश ऐसे। तू शठ अमहूं लरत अभैसे॥ प्रथम पिता मास्यौ रघुराइ। दूजो अबजूझो इत आइ ६५८॥ दोय पितामहं बचो न कोय। अजहूं न लजत दशा निजजोइ॥ तातेंले मम शर चढ़ि तापैं। बेगि जाऊ अम विनहिं पितापैं ६५९॥ इमि कहि हन्यो बिशिष छरभारी। गत असुअवनि परो वनचारी॥ सोशुणि राम आप रण आये। लखि मुनिपुत्र आचरज पाये ६६०॥ निज समरूप अनूपमनोहर। बोलेवचन वीर समसुन्दर॥ तुम काके कुमार मुनि अहहू। सोनिज नाम पिता सह कहहू ६६१॥

दो० कह कुश हम सीता सुवन जानत नहिं पितुनाम।
बालमीक आश्रमरहैं मुनिआचरण ललाम ६६२॥
निज सुत शुनिकै रामजू ह्वै प्रसन्नतेहि काल।
कहतभये यह वचनकों नीरजनैन बिशाल ६६३॥
हमनहिं मारहिं शायक तुमहीं मारऊ विप्र।
सुनिरघुनन्दन नन्दन चाप चढ़ायो छिप्र ६६४॥

चौपाई॥

मोहनाख मास्यों शरसाथ। मोहि गिरेरथपैं रघुनाथ॥ मायानर सम क्रीड़त जगमैं। मनुज रूप सोहे रण मगमैं॥ ६६५॥ तब लवकुश रघुबर आभरन। मुकुट सहित लीने निज करन॥ तीनऊ बन्धु मुकुट करिलियो। जाइ जनक नंदिनि कहं दियो ६६६॥ लव लवाइ हनुमत रिच्छे-सहिं। संगले हयगे आश्रम देशहिं॥ जनक सुता पति भूषण जोही। लखि हनुमतहि बध्यो अति मोही ६६७॥ हासुत रांड करी मोहि आज। मास्यो जनक जगत सिर ताज॥ कहा करोगे अब बलवान। बापमारि यश कियो जहान ६६८॥ हनूमान कहंबांध्यो जोहि। बूड़िमरौ आवत जिय मोहि॥ याने किये अमित उपकार। उरिन कियो सो बांधि कुमार ६६९॥

दो० सुनि जननी के वचन कुश अति व्याकुल भय चित्त।
हमनहिंजानतजनककों तुमऊंकही नहिंहित्त ६७०

मौक्तिकदाम छन्द ॥

कह्यौ तुम मारहु भूपहि जाय। बध्यौ हमनै तब चाप चढ़ाय ॥ सिया बिलपै इमि पुत्रन साथ। तेहिक्षण आइ गये मुनि नाथ ९७१ ॥ लख्यौ सबसो रणको तहं तौर। परे रघुनन्दन भूपति मौर ॥ सिया संग आइ गये तेहि ठाम। जहां सह बन्धु रहे प्रभु राम ९७२ ॥

दो० कहत राम इच्छा भयो यह सब सियरण घोर।
कोजानै प्रभुकाकरत कहा समुझिकेहि ठौर ९७३॥
हनूमान रिच्छ सको बन्धनदियो छोड़ाय।
मुनिआयसुलहि जानकी बोली बांहउठाय ९७४ ॥
मन क्रम वचन सुरामपद जौं मम प्रीति रसाल।
तौसब जीवहिं जैपरें समर मरे इहि काल ९७५ ॥

चौपाई ॥

उठि रघुवर मुनिवर पद बंदे। सुत सह सियहि देखि आनंदे ॥ भरत आदि जागे सबभाई। लंकापति सुत सह कपिराई ९७६ ॥ जेजे रहे परे धरणीमें। ते सब उठे मोद भरि जीमें ॥ मिले परस्परआनंद छाये। देखिरामपद शीस नवाये ९७७ ॥ तब मुनि कह्यौ सियहि प्रभुलेहु। बिनुअघ याहि गुमहु बुधि गेहु ॥ यह तुमरे सुन कुश लवदोऊ। परम बली गुण गायक सोऊ ९७८ ॥ बिनु जाने कीनो अपराधु। तेहि प्रभु छमहु छमा धरसाधु ॥ इमि कहि चरण बीचलैडारे। लाए राम कंठदो उवारे ९७९ ॥ बढ़ी प्रीति कछु बरणि न जाई। यवइमि कहहिं देखि दोउ भाई ॥ राम सुवन अस होंहिं न काहे। पुनि मुनि बल सागर अवगाहे ९८० ॥

दो० तब लवकुश सीता सहित बालमीकि लै साथ।
सदल अवध आवत भए मोद भये रघुनाथ ९८१ ॥

चौपाई ॥

अश्वमेध मख पूरण कीनो। बिविधि दान महि देवन दीनो ॥ सकल भूमि संकल्पी राम। बिप्रन बहुरि दई लै

दाम ९८२ ॥ कीनो सरजू महं असनानहिं । बाढ़ौ सुख
अगगुनी बखानहिं ॥ लखि सुतसुतने कोशल रानी । अति
प्रमुदित भई गद गद बानी ९८३ ॥

दो० रामजे राजहिं सुत सहित प्रमुदित चित श्रीराम ।
रही जानकी धाम निज सुन्दर पूरण काम ९८४ ॥

सो० घर घर भयो अनन्द अवध पुरी पूरी सुखनि ।
जय जय रघुकुल चंद बरणहिं सगरे नगरजन ९८५ ॥

दो० कछुक काल मैं राम की जननि गईं हरि धाम ।
तिन सब की कीन्ही क्रिया कृपा सिंधुअभिराम ९८६ ॥

तोटक ॥

कुशलव कहं राज समाज दियो । निज धामहिं जान
बिचार कियो ॥ बिधि नै तब काल तहां पठयो । मुनि
होय परमापति पास गयो ९८७ ॥ तब राम कह्यौ बचनै
फनिसों । जबलौं हम बातकरैं मुनिसों ॥ तबलौं इत आवइ
नाहिं कोई । इत आवइहै मम बध्य सोई ९८८ ॥ प्रभु
बंधु तबै मुनि द्वार रहे । बिधिवा कहि काल बुझाइ
कहे ॥ रघुनन्दन जू इमि बैन कह्यो । हम हूं पुर आवन
आसु चह्यो ९८९ ॥

दो० इतनेइ आये द्वार पैं दुरवासा मुनि राइ ।
कोही मुनि लछमण करी खबर रामसों जाइ ९९० ॥

चौपाई ॥

राम मुनिहिं पूज्यो गृहलाई । सत्य सिंधु त्यागेउ पुनि
भाई ॥ गए अनन्त तबै भगवन्त । चलन चहे बैकुण्ठ
तुरन्त ९९१ ॥ सुग्रीवादि कीश लैसंग । सीय भरत अरिदं-
मन सुढंग ॥ रघुबर चले तीर्थ शुपतार । संग अवध पुर
मनुज कितार ९९२ ॥

दो० जामवन्त हनुमन्त अरु राखि लंका कन्त ।
निज पुर पशु पच्छी सबै पठए राम तुरंत ९९३ ॥

हरिगीती छन्द ॥

पठये तुरत निज पुरहि प्रभु अपवर्ग भगतन कोंदियो ।

वामला सहित कमलेश जाइ निवासनिज मंदिर कियो॥
जबजबदनुज दुखदेहिं अधरम सोंभगत दुख लहतहैं। तबतब
तिन्हनके नाश हित तन श्यामसुन्दरगहतहैं ९९४॥ नहिं
और कोउ जगबीच हरि बिन जो हरै भय घोरकों। तातें
उचित चित हित समुझि भजुनवल जुगल किशोरकों॥
इमि राम गुण अभिराम जेमति धाम मानव गावहीं।
रघुबरकृपा हरिभक्तिते इच्छितफलहि जगपावहीं ९९५॥

दो॰ यह रामायण सागरहि बरण्यो बुन्दसमान।
रामकृपा पूरणभयो राचन्द गुणगान ९९६॥
फणके नाते भिल्लिनिहिं निजपद दियो निवास।
कोरघुबरसो और जगजनहित गिरिधरदास ९९७॥
रावण खल पावन कियो दियो अभय पद दान।
कोउभांति सन्मुखभयो यहमन आनिसयान ९९८॥
गुन आरा मैं दुख कटै मन आरा मैं लेत।
हरि पुर आरामैं लहत रामैं कहत निकेत ९९९॥
रघुवंशी सिर मौर तजि भजहिं जानि हित चैार।
तेनरखर कूकर सरिस निंद्य कुठौर कुतैार १०००॥

सो॰ कियो दशानन नाश जिन छणमें निजभक्तहित।
पूजत गिरिधरदास तिनकेचरण सरोजनित१००१॥

इतिश्रीगिरिधरदासविरचितंरामकथामृतंसमाप्तंशुभमस्तु॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
रामायण तुलसी कृत प०	भगवद्गीता सटीक नागरी	विक्रम विलास
रामायण तुलसी कृत स०	रामायण राम विलास	इन्द्रजाल नागरी
सत सई रामायण	यमुना लहरी	कायस्थ कुल भास्कर
कविता वली रामायण	षट् पंचाशिका	क़िस्सह गोपीचन्द भरतरी
गीता वली रामायण	कल्प सूत्र भाषा नागरी	बहार बिन्द्रावन
रामायण दोहा वली	विनय पत्रिका सटीक	पद्मावती खंड आल्हखंड
सुन्दरी चरित्र	किताब पटवारी ४ भाग	लावनी व शेर बनारसी
रामायण नानार्थ नौ-	रस राज	युगल विलास
सङ्न्हा वली	कृष्ण प्रिया	भाषा महाभारत विजय
दूसरी पुस्तक रामायण	भगवद्गीता विष्णु सहस्र	मुक्तावली
माला	नाम सहित	जनक पच्चीसी
तीसरी रामायण गीता-	कल्प सूत्र	शृंगार प्रकाश
ष्टक	ज्ञान स्वरोदय	दोहावली रत्नावली
चौथी ज्ञान दोहा वली	भरतरी गीत	स्त्री दर्पण
पांचवीं रस सारिणी	देवी भागवत नागरी	समर विहार विंद्रावन
छठीं तिथि बोध	बिहारी सत सई सटीक	रमल सार
सातवीं पुस्तक मातादत्त	विश्राम सागर	कथा चित्रगुप्त
कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्यनारायण की कथा	मनुस्मृति उर्दू टीका स०	कृष्ण बाल लीला
सटीक	वैष्णवी संध्या	गीत गोविंद सटीक
शनिश्चर की कथा	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स०	रामाभिषेक नाटक
राम कलेवा	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	इन्द्र सभा नागरी
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	आनन्दामृत वर्षिणी	सिंहासन बत्तीसी
कविकुल कल्पतरु भाषा	निर्णय सिंधु	शुक बहत्तरी
प्रेम रत्न	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अर्थात्-
बनयात्रा	दैवज्ञाभरण	गुल बकावली
भजना वली	ज्ञान चालीसी	गुल सनोवर नागरी
बारहमासा फ़क़ीर अल्ला	शङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चंद्रिका
बख्श	योग बशिष्ठ देवनागरी में	छन्दोर्णव पिंगल
बारहमा० बलदेव प्रसाद	मार्कण्डेय पुराण	हिदायतनामा मालगुज़ारी
कृत	बैताल पच्चीसी	हिदायतनामा बंदोबस्त
कृष्ण सागर	दानलीला नागलीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
हारीत स्मृति नागरी	सभा विलास	बाला बोध

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
क़ानून	अक्षरावली	लंका काण्ड
	अक्षर दीपिका	उत्तर काण्ड
ताज़ीरात हिन्द अर्थात्	विद्यांकुर	अक्षरारम्भ
ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०	बाल बोध	भाषा तत्त्व दीपिका
ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	भाषा चन्द्रोदय	बाला भूषण
ज़ाबित फ़ौजदारी	इंगलिस्तान का इतिहास	हिदायत नामा मुदर्रि-
मजमूआ ऐक्ट लगान	गणित तत्त्व लता १ भाग	सान हल्क़ह बंदी
अवध जिस्के साथ नीचे	तथा २	शिक्षावली
लिखे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं	तथा ३	भोज प्रबन्धसार
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई० जदीद	गणित प्रकाश १ भाग	राजनीति
ऐक्ट १८ सन् १८६३ ई०	तथा २	स्त्रियों की हितोपत्रिका
ऐक्ट २४ सन् १८६५ ई०	तथा ३	अवध भूगोल
ऐक्ट १६ सन् १८६५ ई०	तथा ४	कवित्त रत्नाकर
ऐक्ट नं० २६ सन् १८६६ ई०	क्षेत्र चंद्रिका १ भाग	भूगोल दर्पण
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा २	बीजगणित १ भाग
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	रेखागणित १ भा	तथा २
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २	कैथी वर्ण माला
ऐक्ट ४ सन् १८६१ ई०	सूरजपुर की कहानी	शिशु बोध
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	विद्याचक्र	पशु चिकित्सा
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	भूगोल तत्त्व	महाभारत भाषा छन्द
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	पदार्थ विद्यासार	प्रबंध में जो श्रीमन्महा-
ऐक्ट नं० १९ सन् १८६० ई०	वर्णप्रकाशिका	राजाधिराज उदितनारा-
क़वायद रेलवे और उस्के	मंगल कोष	यण सिंहजी काशीनरेश
साथ क़ानून भी हैं॥	पत्र दीपिका	ने गोकुलनाथादि कवी-
ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०	भारत खण्डिका	श्वरों से रचना कराय कल
अर्थात् क़ानून लगान	क्षेत्र प्रकाश	कत्ते में छपवाया था वही
मुमालिक मग़रबी व शिमाली	पत्र हितैषिणी	श्री युत माधव सिंह गढ़
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	रामायण सातों काण्ड	अमेठी नरेश की सहायता
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	बाल काण्ड	और अनुराग से इस यन्त्रा-
सरिश्तह तालीम की	अयोध्या काण्ड	लय में अत्त्युत्तम वेष के
पुस्तकें	आरण्य काण्ड	पुष्ट अक्षरों में १९ पर्व बड़ी
भाषा लघु व्याकरण	किष्किन्धा काण्ड	शुद्धता से छपा है॥
धात्वर्गव	सुन्दर काण्ड	